बाल विज्ञान पत्रिका

चकमक

नवम्बर, 1987

रु. 2.50

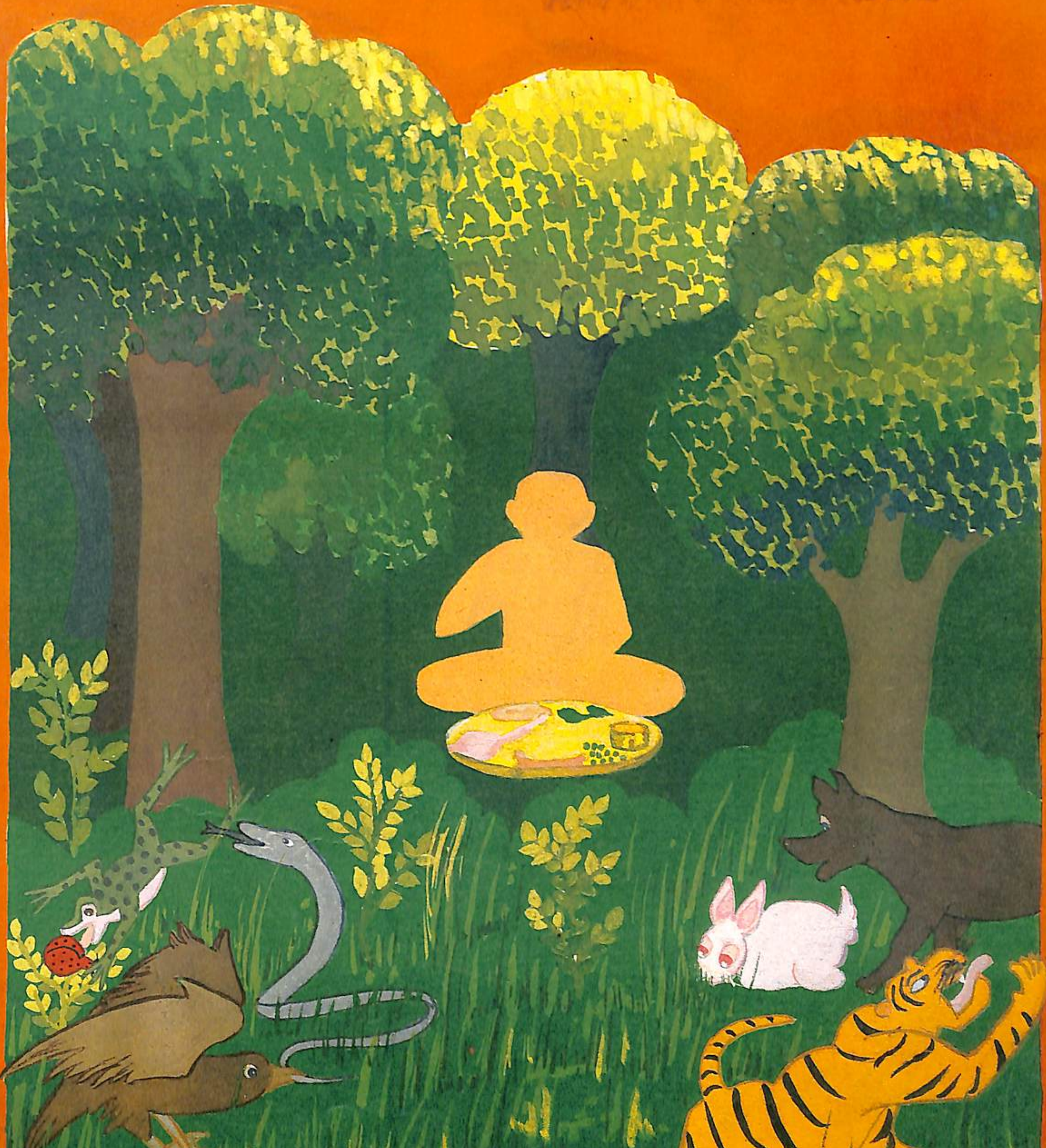

चित्र: अन्नपूर्णा त्रिपाठी, १२ वर्ष, सागर

छाया: विनोद रायना

इस अंक में...

पाठक लिखते हैं...	2
चकमक दोस्त	4
बदरा पानी दे...	5
कविता : त्योहार	9
मेरा पन्ना	10
हरियाली ही हरियाली	12
मेरा पन्ना	17
खेल खेल में : कला	19
माथा पच्ची	23
कविता : बारिश की रात	26
अपनी प्रयोगशाला	27
खेल कागज का	28
कविताएं	29
कहानी : वर्षगांठ	30
मेरा पन्ना	37
पर्यावरण	38

आवरण : जया विवेक

चकमक बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष 3 अंक 5 नवंबर, 1987

संपादक:
विनोद रायना
संपादक मंडल:
राजेश उत्साही, गोपाल राठी
कला:
जया विवेक
उत्पादन/वितरण
हिमांशु बिस्वास, कमलसिंह

चकमक का चंदा
छमाही: 15 रुपए
वार्षिक: 30 रुपए
डाक खर्च मुफ्त
चंदा, मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।
कृपया चेक न भेजें।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता:
एकलव्य
ई-1/208, अरेरा कालोनी
भोपाल-462 016 (म.प्र.)

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

पाठक लिखते हैं

अगस्त, 87 अंक पर दो कविताएं

- एक -

नींद नहीं आती रात भर
भूख नहीं लगती दिन भर
नहीं लगता मन, पढ़ाई में/खेल में
गुड्डा गुड़ियों के ब्याह में/तितलियां पकड़ने में
सुना है गुरूजी से—
विज्ञान का यह प्रगतिशील युग
आ गया है अपनी चरम सीमा पर
बैठे हैं हम सब विनाश के कगार पर
महान देशों के महान शासक
कभी भी सारी दुनिया को राख की ढेरी
बना सकते हैं, लगेगा पल भर
ओह! क्यों.... क्यों होगा यह सब?
क्या महान देशों के महान शासक
आदमी नहीं होते?
क्या उन्हें अच्छा नहीं लगता
दूर तक फैला नीला आसमान!
हरे-भरे बगीचों, फसलों से भरी धरती
पहाड़, जंगल, नदियां
क्या उन्हें नहीं भाता।
चिड़ियों का चहकना
फूलों का महकना
झरनों का उछलना
बादलों का बरसना?
क्या उन्होंने कभी नहीं सुनी कोयल की
कुहू कुहू?
जो आम के झुरमुट में छुपी हमें लुभाती है

क्या उनके बच्चे नहीं हम जैसे
जिनकी उन्मुक्त खिलखिलाहटों पर
सभी निछावर होते हैं?
क्या उन्हें भाता है
राख, आग, धुआं
मौत, श्मशान, सन्नाटा?
नहीं.... नहीं.... नहीं....
सुनो! सुनो! ओ महान शासको!
हम नए अंकुर हैं मानवता के
हमें बढ़ने दो! खिलने दो!
मत कुचलो! मत मसलो!
लेने दो खुली हवा में, स्वच्छ धूप में
भरपूर सांस!
यह धरती, आकाश, सूरज, चांद
यह नदी, पहाड़, झरने, बगीचे
सब कुछ.... सब कुछ हमारा है
हमें इनमें और इन्हें हममें
होने दो एकाकार, आत्मसात्
बनाएंगे हम नई दुनिया
जहां बमों से नहीं
स्नेहिल मुस्कानों से जीता जाएगा सब
कूटनीति नहीं सहानुभूति से समझा जाएगा सब
तुम भी आओ हमारे साथ
हंसों, बढ़ो, खिलो
हम नए अंकुर हैं मानवता के!

□ गिरिजा कुलश्रेष्ठ तिलौंजरी, मुरैना

- दो -

आते ही मैंने माथे का पसीना पोंछा
छोटे 'श्री' ने आते ही पूछा
भैया क्या आप दोगे उत्तर
इन लोग क्यों करते हैं दंगा?
मैंने कहा तुम ना समझ हो!
भैया ये क्या होता है आतंकवाद?
ये क्यों बनाते हैं बम?
क्यों बनाते हैं विस्फोट की दुनिया?
मैंने कहा तुम ना समझ हो!
हम क्या खाएंगे भैया?

चित्र : हेमंत पाटीदार, छठवीं, पीपल्या मंडी

टॉमी, मेरा प्यारा बगीचा कहां होंगे तब
होंगे युद्ध, आतंकवाद जब?
मैंने कहा तुम ना समझ हो!
चादर प्रदूषण की ओढ़ धरती,
कैसी लगेगी, ये दुनिया, आसमान, तारे?
क्या होगा इस सुंदर धरती का
मैं नहीं पूछूंगा भैया, अब आपसे
क्योंकि मैं ना समझ हूं!

□ विवेक चाटे, चांदामेटा
छिंदवाड़ा

जुलाई अंक बहुत आकर्षक है। विशेषकर ओज़ोन की छतरी, लोहा और खेल खेल में - कला। ओज़ोन की छतरी को जो काल्पनिक रूप प्रदान किया गया है वह बहुत ही प्रशंसनीय है। वाकई में आज पर्यावरण की समस्या एक विकराल रूप धारण करती जा रही है। अगर इस पर ध्यान न दिया गया तो पृथ्वी के विनाश होने में देर नहीं। कई वैज्ञानिकों का कहना है कि पृथ्वी की आयु 30-40 वर्ष से ज्यादा नहीं और यदि पर्यावरण या प्रदूषण की समस्या पर ध्यान न दिया गया तो पृथ्वी की आयु 20-30 वर्ष ही रह पाएगी। इसलिए सरकार को चाहिए कि वह इस समस्या पर पूरी तरह ध्यान दे। पर्यावरण की समस्या पर ध्यान न देने के कारण से ही आज देश को सूखे और बाढ़ जैसी विकट कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है। सरकार को चाहिए कि वह बड़े-बड़े कल कारखाने, जो आवश्यकता से अधिक धुआं छोड़ते हैं तथा जिनसे उत्पादन की मात्रा कम हों, उन पर रोक लगा दें। साथ ही ऐसे वाहनों पर भी रोक लगाई जाए जो अधिक आवाज और धुआं छोड़ते हैं। इसके लिए हम सभों को भी तत्पर रहना चाहिए तथा वृक्षारोपण को अधिक महत्व देना चाहिए। तभी हम उस ओज़ोन की छतरी को बचा सकते हैं जो अब तक हमें बचाए हुए हैं।

□ संजय क्लाइव,
संगीता क्लाइव, सामसट्टी, बस्तर

अब चकमक के विषय में इतना कह देना पर्याप्त है कि उसकी हर प्रति पठनीय व संग्रहणीय है। जुलाई अंक अपने साथ ढेर सी रोचक व उपयोगी सामग्री लाया। लोहा एक अद्‌भुत धातु, ओज़ोन की छतरी विशेष उल्लेखनीय है। श्री विष्णु चिंचालकर की कला कृतियां अनोखी हैं।

□ गिरिजा कुलश्रेष्ठ, तिलौंजरी

स्तरीय सामग्री तथा ज्ञानवर्धक तो चकमक की विशेषता है ही। कलेवर और छपाई भी कम आकर्षक नहीं। पत्तों, छिलकों, गुठलियों के सहयोग से खिलौने बनाने का जो ढंग आप नियमित रूप से दे रहे हैं, उसको बच्चों द्वारा बेहद सराहा जा रहा है। मैंने एक स्कूल में जाकर स्वयं उसका प्रभाव देखा है। भिंड के कस्तूरी बाई अग्रवाल ईंटर कालेज में छोटी कक्षाओं के छात्रों द्वारा ऐसे खिलौनों को बनाने का प्रयास भी किया गया। बधाई स्वीकारें।

□ महेश कटारे 'सुगम', भिंड

हमारे लिए चकमक
च = चमत्कार (प्रयोग) सिखलानेवाली
क = कला सिखलाने वाली
म = मददगार, ज्ञान वृद्धि में
क = कल्याणकारी

□ चंद्रकांत वायगांवकर
नामली, रतलाम

चकमक का अगस्त अंक पसंद आया। सहमा हुआ कल, कागज़ के हजार पक्षी बहुत अच्छे लगे। सवालीराम कालम को नियमित रखें।

□ मुकेश शर्मा, सीहोर

एलिस धारावाहिक अच्छा लगा।

□ रमेशचंद्र नागेश, मुकेश, सीहोर
दिग्विजय शुक्ला, उज्जैन

इन सभी को चकमक पसंद आई:
यादवेन्द्र सिंह, विरसिंहपुर; माधव नामदेव, जबलपुर; मधु चौधरी, पांढुरना; ओम प्रकाश दुबे, गुना; मुकेश, सीहोर; विवेक चाटे, चांदामेटा; इम्तियाज, सरगुजा; तरुणा जैन, चन्द्रशेखर, धार; डॉ.अवध ब्योहार, जबलपुर; असीम बागची, नैनीताल

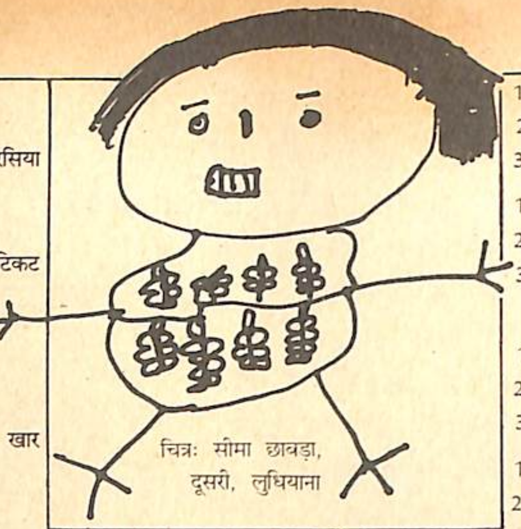

चित्रः सीमा छावड़ा, दूसरी, लुधियाना

चकमक दोस्त

1. नाम
2. रुचियां
3. पता

1. पंकज गुप्ता, 9 वर्ष
2. चित्रकारी, पुस्तक पढ़ना
3. क्वार्टर नं. 2/113 डाक तार कालोनी, बैरसिया भोपाल, 462 012

1. किरन शुक्ला, सातवीं
2. चकमक पढ़ना, फुटबाल खेलना, डाक टिकट संग्रह करना
3. पुरानी बस्ती, कटघोरा

1. रेणु गीते, छटवीं
2. चकमक व अन्य पत्रिकाएं पढ़ना
3. माध्यमिक शाला, भगवानपुरा व्हाया खार (खंडवा)

1. राकेश वर्मा, 16 वर्ष
2. दूरबीन से दूर की वस्तु देखना
3. 12 वीं अ.शा.बा.उ.मा.वि. कसरावद

1. शिवनारायण गौर
2. चित्र बनाना
3. हिरनखेड़ा, सिवनी मालवा, होशंगाबाद

1. राखी गड़करी, 10 वर्ष
2. पेंटिंग, खेलना

1. राजेश बड़ोले, 13 वर्ष
2. पढ़ना, खेलना, घूमना, बातें करना
3. पावर हाउस के पीछे, खरगोन

1. रूपेशवैष्णव, 14 वर्ष
2. जूडो कराटे सीखना,
3. शा.उ.मा.वि.नवागढ़ दुर्ग

1. मूलचंद जांगिड़, 12 वर्ष
2. चकमक पढ़ना, साईकिल चलाना
3. कूंड हवेली, पोस्ट-कनापूर श्योपुरकलां, मुरैना

1. राकेश सोनी, 13 वर्ष
2. विज्ञान की किताब पढ़ना
3. के.सी.सोनी, आई.टी.आई. कोनी, बिलासपुर

1. भुवनेश्वर प्रसाद साहू, 18 वर्ष
2. कहानियां लिखना, अंधविश्वास दूर करना
3. द्वारा श्री शिवराम साहू, कपड़ा दुकान, मु.पो. कसडोल, रायपुर

1. अनूप श्रीवास्तव, 19 वर्ष
2. बिजली का काम करना, क्रिकेट खेलना
3. शा.उ.मा. शाला, श्याम नगर

1. ओमप्रकाश चंद्राकर, 11 वर्ष
2. चकमक, पुस्तक पढ़ना, कैरम खेलना
3. ग्राम लवन, बलौदा बाजार, रायपुर

1. जुगल किशोर यादव, 14 वर्ष
2. टी.वी. देखना, कैरम खेलना, पढ़ना
3. सकेरा भड़ारन, टीकमगढ़ 472 331

1. चंद्रभूषण महाजन, नवमीं
2. टेनिस खेलना, देखना
3. 129, भगतसिंह मार्ग, महेश्वर, खरगोन

1. चेतना भादविया, 13 वर्ष
2. बैडमिंटन खेलना
3. 3, रासमंडल, धार

1. धीरज माहेश्वरी, 12 वर्ष
2. पुस्तकें पढ़ना, क्रिकेट
3. राम बाग तिलकपथ, मल्हार आश्रम, इंदौर

1. पीयूष जैन, 15 वर्ष
2. खेलना, धार्मिक और मार्मिक फ़िल्मों के गानों की फरमाईश भेजना
3. द्वारा डॉ. अशोक जैन, म.गा. मार्ग, मण्डलेश्वर (म.प्र)

1. अनिल बंदेवार, 14 वर्ष
2. क्रिकेट खेलना, पत्र मित्रता
3. द्वारा जे.एल. बंदेवार, नई आबादी वार्ड नं. 4 छिंदवाड़ा

1. अंकुर, 6 वर्ष
2. चित्र बनाना, किताबें पढ़ना, खेलना
3. 61/D, मयूर विहार, पाकेट-3, नई दिल्ली 110 091

1. अपूर्व नागर, 10 वर्ष
2. अच्छी किताबें पढ़ना
3. 61/D, मयूर विहार, पाकेट-3, नई दिल्ली 110 091

1. अश्वनी कुमार साहू, 15 वर्ष
2. पत्र मित्रता, पुस्तक पढ़ना
3. शा.उ.मा. शाला, चांपाझर, रायपुर

1. ओमप्रकाश शर्मा, 12 वर्ष
2. क्रिकेट, पुरस्कृत होना, चित्र बनाना
3. निसरपुर, धार

1. श्रेयस नेगी, 12 वर्ष
2. क्रिकेट, फुटबाल खेलना
3. कचहरी रोड, मंडलेश्वर, खरगोन

1. पीयुषकांत नेताम, 10 वर्ष
2. सायकिल चलाना, पढ़ना
3. शा.मा.शाला, कोपरा, तह. कोंडागांव, बस्तर

1. शैलेन्द्र कुलश्रेष्ठ, 10 वर्ष
2. क्रिकेट खेलना, पढ़ना, चित्र बनाना
3. प्राचार्य शा.उ.मा.वि. दहीकोंगा (बस्तर)

1. शैलेन्द्र बर्वे, 9 वर्ष
2. चित्र बनाना, शतरंज व क्रिकेट खेलना
3. 18, ज़मींदार मोहल्ला, खरगोन

1. ज्योति जैन
2. कहानी पढ़ना, चित्रकारी करना, फ़िल्म देखना
3. एम.सी.जैन, आफीसर कालोनी, टंकी के पास, धार (म.प्र.)

1. विजय पांडे, 17 वर्ष
2. पत्र मित्रता, पढ़ना, फोटोग्राफ़ी, कराटे
3. शा.उ.मा.वि. सिंघरा, बिलासपुर

1. मुकेश दास बैरागी, 9 वर्ष
2. भंवरी घुमाना, खेलना

1. सत्यनारायण पाटीदार, 9 वर्ष
2. घर का कार्य करना

1. भंवरलाल चौधरी
2. पढ़ना, लिखना, क्रिकेट खेलना
3. कालूखेड़ा, रतलाम

1. योगेश पाटीदार, 10 वर्ष
2. पुस्तक पढ़ना, चित्र बनाना

1. अनिल पाटीदार, 10 वर्ष
2. क्रिकेट खेलना, चित्र बनाना

1. महेश पाटीदार, 10 वर्ष
2. पढ़ना, कबड्डी खेलना

1. योगेन्द्र आर्य
2. कहानी की पुस्तकें पढ़ना, चित्र बनाना
3. सबका पता
ग्राम सुवासा, त. बड़नगर, उज्जैन

1. निलेश महाजन, 13 वर्ष
2. शतरंज और क्रिकेट
3. महेश्वर, खरगोन

1. आशुतोष रघुवंशी, 9 वर्ष
2. चकमक पढ़ना, चित्रकारी करना
3. द्वारा श्री एस.आर. रघुवंशी, सिवनी मालवा, होशंगाबाद

1. नवीन दुबे, 9 वर्ष
2. क्रिकेट, सुंदर पत्थर जोड़ना

1. प्रवीण दुबे, 13 वर्ष
2. पढ़ना, खेलना

1. सुचेता दुबे, 15 वर्ष
2. कहानी कविता लिखना, पत्र मित्रता करना, पौधे लगाना
3. सबका पता
द्वारा एम.डी. दुबे, विकास खंड अधिकारी, राजेन्द्र ग्राम, शहडोल-424 224

1. ललिता चौकड़े, आठवीं
2. पढ़ना
3. कवड़िया, व्हाया मंडलेश्वर (प. नि.)

1. कंवरलाल यादव, 14 वर्ष
2. खेलना, पत्र-मित्रता करना, परिभ्रमण
3. माध्यमिक विद्यालय पालड़ा, शाजापुर

बदरा पानी दे....

छाया: ए.एच.अली 'फ्री प्रेस जनरल' से साभार

पास नहीं है बैल—बदरा पानी दे
जालिम है टू बैल—बदरा पानी दे
इज्जतदार गरीब पुकारे, ढोंगी मारे दूध छुवारे

चटक रही खपरैल—बदरा पानी दे....
छोड़ पंछाही लटके झटके, एक बार नहला जा डट के
तू गरीब की गैल—बदरा पानी दे....

('सामाजिक गीत' से साभार)

अगस्त अंत तक यह माना जा रहा है कि वर्ष 1987 शायद इस सदी का सबसे कम वर्षा वाला वर्ष होगा। अब यह अलग बात है कि जब तक चकमक का यह अंक तुम्हारे पास पहुंचे, तब तक बहुत वर्षा हो चुकी हो! हम भी इसी बात की दुआ कर रहे हैं।

मगर यह वर्षा या मानसून आखिर गया कहां? यह तो हमें मालूम है कि हमारे देश की अधिकांश खेती मानसून पर ही निर्भर होती है। हमारी भोजन

व्यवस्था का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा अनाज हमें खेती से ही मिलता है। इसलिए यह भी कह सकते हैं कि मानसून हमारे देश की जीवन धारा का एक महत्वपूर्ण अंग है। और जब इस तरह मानसून गायब हो जाता है तो चारों तरफ हाहाकार मचने लगता है। किसान खेती नहीं कर सकते हैं, और घरों में पीने के लिए पानी नहीं है—नहाना और कपड़े धोना तो अलग बात रही। अब ऐसे दुख और परेशानियां तो गांव वाले आमतौर पर लगातार सहते ही रहते हैं। कौन इसकी अधिक परवाह करता है! सुख-सुविधा तो जैसे शहरवासियों की ही बपौती हैं। किसानों के लिए तो हम पाठ्य पुस्तकों में यही पढ़ते रहते हैं—'कठिन परिश्रम से जीवन बिताना इनका काम है।' पर इस साल तो लगता है उन्हें भोजन भी शायद ही मिले। खेती कर नहीं सकते, घर बैठ कर खाएंगें, पर कल का क्या होगा....!

ऐसा कहा जाता है कि विज्ञान ने इतनी तरक्की कर ली है कि आने वाला मौसम कैसा होगा, यह जानकारी बहुत पहले ही हासिल की जा सकती है। शायद तुमने देखा हो हर रोज़ रात को टेलीविजन पर 'इंसेट 1 बी' से मिले चित्र की व्याख्या होती है। देश के चार महानगरों के तापमान बताए जाते हैं (जैसे इस देश में इन चार महानगरों के अलावा और कहीं लोग रहते ही नहीं हैं)! तो सवाल यह उठता है कि अगर करोड़ों रूपयों के यंत्रों से समय से पूर्व मौसम की जानकारी मिल सकती है तो उसे किसानों तक तुरंत क्यों नहीं पहुंचाया जाता?

इस साल मानसून न आने के कई वैज्ञानिक कारण दिए गए हैं। जैसे पैसेफिक महासागर जब अधिक गरम होता है (इस गरम होने को 'अल-निनो' नाम दिया गया है) तो बारिश दक्षिणी अमरीका में पेरु देश में होती है। ऐसी हालत में भारत में मानसून नहीं आता है—ऐसा, वैज्ञानियों का कहना है, उन्होंने यह तथ्य कई वर्षों के अवलोकनों से पाया है। कहा जा रहा है कि इस साल भी ऐसा ही हुआ है।

दूसरी तरफ कुछ अन्य वैज्ञानिक कहते हैं कि कैसपियन महासागर में इस साल अधिक गरमी पड़ने के कारण मानसून भारत से 'खींच' लिया गया है। अगर तुम्हारे पास विश्व का नक्शा हो तो उसमें कैसपियन और पैसेफिक महासागर ढूंढ डालो।

भई, अगर यह सब पहले से ही पता था, या मालूम था कि इस साल मानसून शायद ही आए तो यह बात किसानों को भी बता देते। वे बोनी नहीं करते और करोड़ों रुपए का अनाज, जो बीज के रूप में बोया गया है, बच जाता।

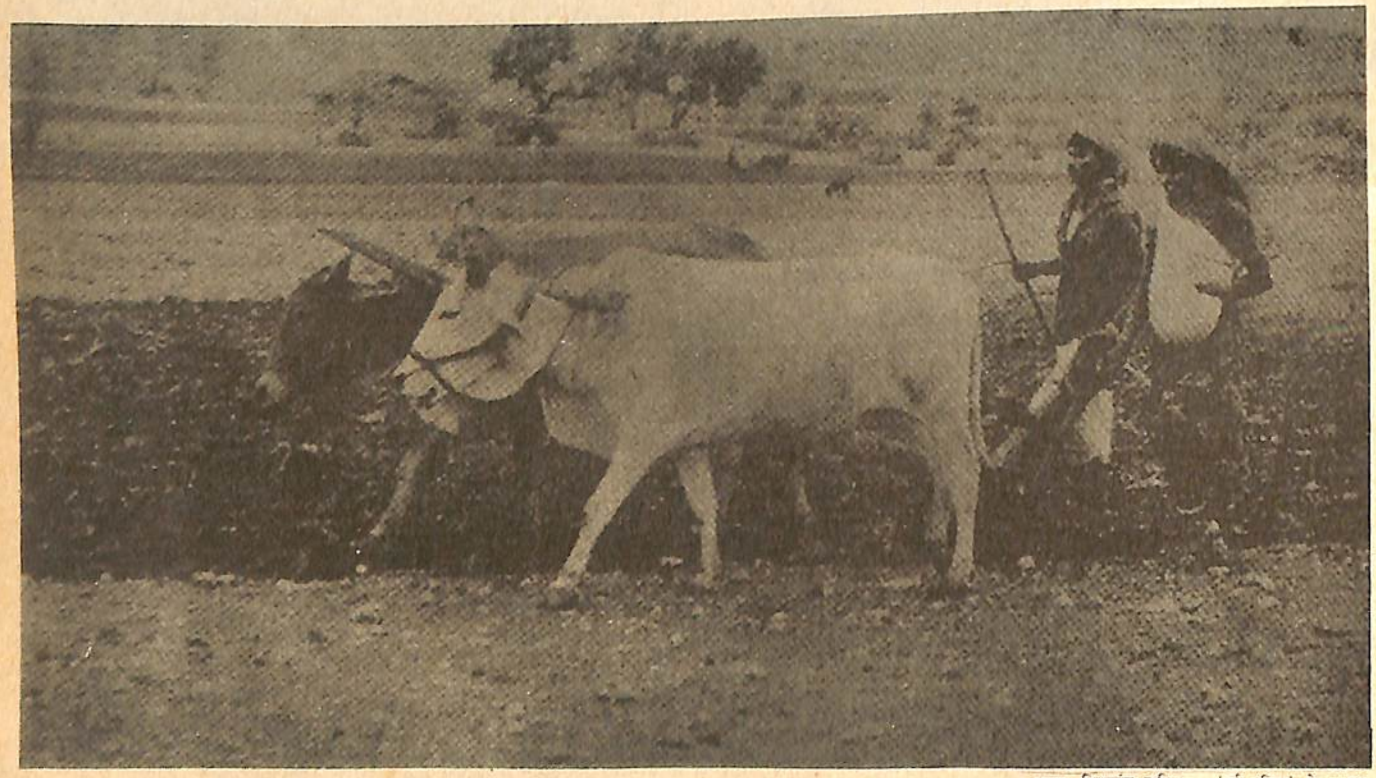

छायाः चित्रकांत पारिख 'नई दुनिया' से साभार

छायाः एस.पाल 'जनसत्ता' से साभार

हमने जब यह बात कुछ वैज्ञानिकों से कही तो उनका जवाब था कि अभी मौसम विज्ञान ने इतनी उन्नति नहीं की है कि किसानों को ठीक-ठीक जानकारी दी जा सके।

तो जनाब रात को हर रोज काहे टेलीविजन पर 'इंसेट 1 बी' वगैरा का ढपला पीटते हो। साफ कहो ना कि यह सब जानकारियां फिलहाल हमारे किसानों के किसी काम की नहीं हैं।

असल में सच्चाई तो यही है कि वैज्ञानिक रूप से मानसून क्या है, कैसे बनता है, आदि अभी ठीक से समझा ही नहीं गया है। इसलिए ठीक-ठीक भविष्यवाणी करना भी संभव नहीं हो पा रहा है।

ऐसे में देश के लोग क्या करें? भई, हम तो **घाघ** और **भड्डरी** की कहावतों से परिचित हैं। हमें लगता है कि उनकी कहावतें अगर कई वर्षों के अवलोकनों पर आधारित हैं (जैसा कि कहा जाता है) तो 'अल-निनो' व कैसपियन सागर की गरमी जैसी वैज्ञानिक कहानियों से बहुत अलग न होंगी। तो देखें घाघ और भड्डरी वर्षा न होने या कम होने के बारे में क्या कहते हैं:

मद्यादि पंच नछत्तरा, भृगु पच्छिम जो होय।
तो यो जानों भड्डरी, पानी पृथी न जोय।।

यदि मद्या, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त और चित्रा में शुक्र पश्चिम दिशा में हो तो भड्डरी कहते हैं कि पृथ्वी पर पानी नहीं बरसेगा।

माघ अंजोरी पंचमी, परसै उत्तम बाय।
तो जानो की भादवौ बिनु जल कोरा जाय।।

यदि माघ सुदी पंचमी को अच्छी हवा चले तो समझ लो कि भादों महीना बिना पानी के जाएगा।

मंगल रथ आगे चलै, पीछे चलै जो सूर।
मंद वृष्टि तब जानिए, पड़सी सिगलो झूर।।

यदि मंगल आगे हो सूर्य पीछे हो तो कम वर्षा होगी और सभी जगह सूखा पड़ेगा।

मौन अमावस मूल बिन, रोहिनि बित अखतीज।
सावन सरवन ना मिलै, वृक्षा बखेरो बीज।।

यदि मोनी अमावस्या को मूल नक्षत्र न हो, अक्षय तृतीया को रोहिणी न हो और श्रावणी-पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र न हो तो बीज बोना व्यर्थ है—सूखा पड़ेगा।

मृगसिर वायु न बादरा, रोहिनि तपै न जेठ।
अद्रा जो बरसै नहीं, कौन सहै अलसेठ।।

अंधविश्वास के कुएं में....

पानी बाबा आ रे, ककड़ी-भुट्टा ला रे' बच्चे रूठे हुए बादलों को मनाने के लिए ये टेर लगाते हैं। लेकिन इन दिनों बच्चे ही नहीं, बूढ़े, जवान सभी पानी की टेर लगा रहे हैं। भीषण सूखा और अकाल की स्थिति में गांव-गांव, शहर-शहर में इंद्रदेव को रिझाने के लिए आराधना और टोने-टोटकों से लेकर कई विचित्र क्रियाकलाप किए जा रहे हैं।

ईश्वर को मनाने के लिए नर्मदा अंचल के गांव-गांव में 'रामसत्ता' बैठी है, जिसमें चौबीसों घंटे रामधुन चल रही है। कहीं-कहीं अखंड कीर्तन, अखंड रामायण, यज्ञ, सामूहिक पूजन जैसे अनुष्ठान जारी हैं। भोपाल में एक लाख शिवलिंग की पूजा हो रही है। सामूहिक आयोजनों के अलावा व्यक्तिगत साधना भी साथ ही चल रही है। कहीं कोई व्यक्ति एक पैर पर खड़े होकर निरंतर प्रार्थना कर रहा है, तो कहीं कोई निराहार बैठा हुआ है।

मालवांचल के गांवों में उज्जैनी की धूम मची है। चूल्हा जलाकर गांव में धुआं नहीं करने की मान्यता के आधार पर बस्ती से बाहर प्रकृति के आंगन में रसोई बनाई जा रही है। उज्जैनी मनाने के लिए सीतामऊ कस्बा तो एक दिन बंद रखा गया। घर-घर में शिव-पार्वती की प्रतिमाएं पानी में डुबाकर रखी गई हैं। कहीं मंदिर में शिवजी की मूर्ति को गांव वाले दिन भर पानी में डुबाए हुए हैं। महिलाएं सिर पर कलश रखकर जुलूस निकाल रही हैं।

जिंदा आदमी की शवयात्रा बड़ा विचित्र और रोचक आयोजन है, इसमें पूरी-की-पूरी बस्ती बड़े उत्साह से शामिल होती है। कहीं-कहीं गधे पर नकली दूल्हे को उल्टा बैठाकर जुलूस निकाला जा रहा है।

आदिवासी और कुछ अन्य जातियों में मेंढक-मेंढकी की मिट्टी की प्रतिकृति बनाकर घर-घर दान-दक्षिणा मांगने का भी रिवाज है। इसमें कई लोकगीत गाए जाते हैं। वहीं उत्तर प्रदेश के अवध अंचल में संपन्न किसान बुजुर्गों, बच्चों, जवानों व महिलाओं के साथ पशु बांधने वाली रस्सी 'गिराई' को कंधे पर डालकर भिक्षा मांगने निकलते हैं। भिक्षा में मिले अन्न से बाटी (भंवरी) बनाकर उसका समूह भोज होता है। यहीं बच्चे जमीन को गीला कर पानी की रट लगाते हैं।

होशंगाबाद जिले में पानी सिर पर लाने की बजाए लोग पानी के पात्र को दोनों हाथों में उठाकर लाते हैं। कई जगह गुड्डे-गुड़िया का विवाह भी रचाया जाता है।

पानी बरसाने का मध्यप्रदेश से बंगाल तक एक ओर विचित्र नुस्खा देखा जाता है, इसमें व्यक्ति किन्ही सात एकचक्षु (एक आंख) वाले लोगों के नाम सोच लेता है, फिर एक रस्सी में सात गांठें बांधकर उल्टे पैर के फटे जूते से एक नाम लेकर एक गांठ पीटता है। सातों गांठें पिट जाने पर रस्सी आंगन में फेंक दी जाती है। पानी बंद करने के लिए भी यह टोटका किया जाता है। कई समुदायों में थोड़ा सा पानी बरसने पर नग्न लड़की के हाथ से आंगन में अंगारे फिकवाए जाते हैं।

□ **शिवकुमार विवेक**

('नई दुनिया' से साभार)

यदि मृगशिरा में हवा न चले, बदली न हो, जेठ में गरमी न पड़े और आर्द्रा में पानी न बरसे तो खेती करने के झमेले में कौन पड़े।

सावन पहिले पाख में, दसमी रोहनी होय।
महंग नाज अरु स्वल्प जल, विरला विलसै कोय।।

यदि श्रावण कृष्ण पक्ष में दशमी तिथि को रोहिणी नक्षत्र हो तो समझ लेना चाहिए अनाज महंगा होगा और वर्षा बहुत कम होगी, कुछ लोग ही सुखी रहेंगे।

सावन कृष्ण एकादशी, गरजि मेघ थहरात।
तुम जाओ पिय मालवा, हो जइहौं गुजरात।।

यदि सावन बदी एकादशी को बादल गरजकर गड़गड़ाता रहे तो पत्नी पति से कहती है कि, तुम तो मालवा चले जाना और मैं गुजरात चली जाऊंगी। यानी अकाल पड़ेगा।

इन कहावतों से अब तुम ही तय करो कि क्या करना होगा। हां, एक काम जरूर करो कि अगर तुम्हारे इलाके में भी मौसम को लेकर ऐसी कहावतें या लोकोक्तियां प्रचलित हैं, वे हमें भेज दो! हम इनका इस्तेमाल अगले अंकों में करेंगे।

हां, यज्ञ और पूजा से तो बारिश आएगी नहीं—अगर समझना है कि क्यों आती है और क्यों नहीं, तो विज्ञान व घाघ और भड्डरी की कहावतों में छुपे कारणों को परख कर ही पता चलेगा। ● ●

त्योहार

जगमग जगमग
दीपों वाला-
आया है त्योहार निराला!

घर आंगन
सब लिपे पुते हैं
लिए पटाखे लोग जुटे हैं।
फैल गया हर तरफ उजाला!

छप्पर छज्जा
महल-अटारी-
लगें रोशनी की फुलवारी।
झालर की लटकी है माला!

खिल-खिल-खिल-खिल
रात सुहाई,
फुलझड़ियों ने हंसी लुटाई
खुला खुशी के घर का ताला!

गली गली
लग रहा परी है-
पंख पसारे ज्यों उतरी है।
हुआ रूप धरती का आला!

नए-नए
कपड़े हैं फबते-
पहनें सब बच्चे हैं उड़ते।
मचला खूब मिठाई वाला!
आया है त्योहार निराला!

राजनारायण चौधरी

त्र: विवेक

ऐसे-वैसे

मेरे पापा ऐसे कहते
मत बैठो कुर्सी पर ऐसे
बैठे ऐसे तो टूटेगी
नहीं बचेगी एक भी टांग

ऐसे कैसे ऐसे वैसे
थे फिर भी हम ऐसे बैठे
गिरी थी कुर्सी, टूटी टांग
किस की?

कुर्सी की—नहीं
हमारी।
फिर भी हम हैं बाज न आते
फिर बैठे कुर्सी पर ऐसे।

□ मुक्ता गुप्ता, चंडीगढ़

चित्र : शिवेन्द्र पांडिया भोपाल

मेरा स्कूल

बरसात में टपके
आंधी में मटके
पैसा झटके
हरदम खटके
बाढ़ में सटके
गांव से हट के
नीचे वट के
है मेरा स्कूल!
पंडितजी घुड़कते हैं
हम पिटते हैं
पिताजी लुटते हैं
साधू डटते हैं
मेरे स्कूल में।

□ पप्पू त्रिपाठी, उड़ीना (ग्वालियर)

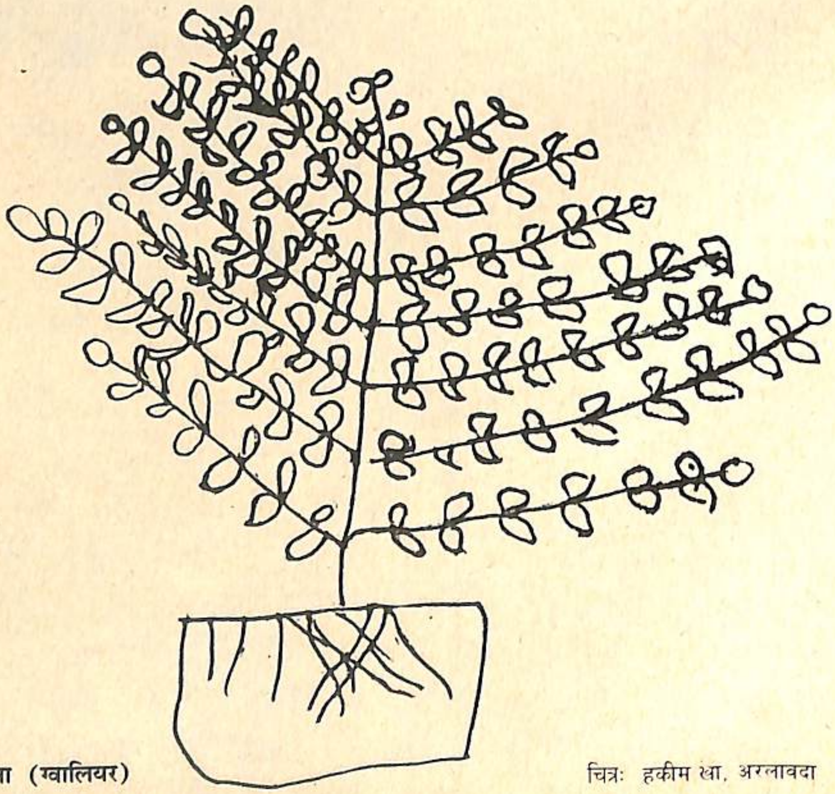

चित्रः हकीम खा, अरलावदा

गिलहरी-बंदर

एक गिलहरी थी
पारी पारी थी वो काली
और सफेदी वाली थी वो
रहती थी वो खेत किनारे

आती जाती चक्कर मारे
ऊपर चढ़कर नीचे आती
नीचे से फिर ऊपर जाती
थी वो शरारती

एक दिन एक बंदर आया
था वह बहुत ही नखरे वाला
इसने उसका कान दबाया
चीखा वो तब यूं चिल्लाया

तब बोली ये आंख दबाके
बंदर मामा क्यों चिल्लाया
मैंने तो इक कान दबाया
बंदर बोला तब झल्ला के

देखूंगा मैं तुझको आके
बोली तब वो हंसते हंसते
आना मामा सीधे रस्ते
ऐसी थी वो एक गिलहरी
पारी पारी थी वो काली

□ मुक्ता गुप्ता, चंडीगढ़

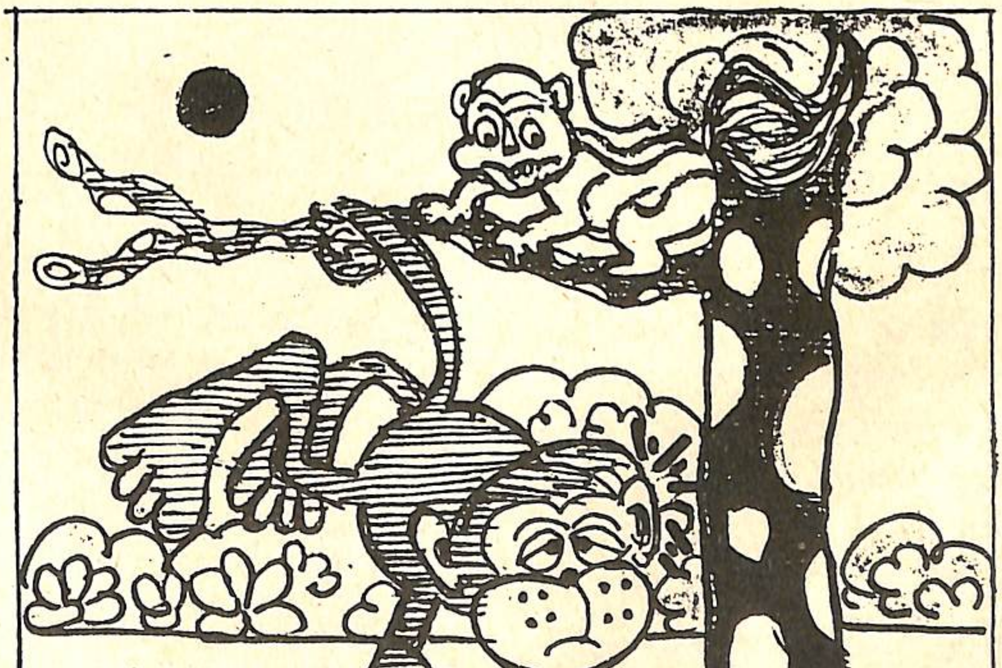

चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

हरियाली ही हरियाली
उर्फ भोजन कहां से आता है?

□ विनोद रायना

किसी जगह की सुंदरता की चर्चा जब हम करते हैं तो कौन सी बात एक दम ज़बान पर आती है? यही ना कि 'कितनी हरी-भरी जगह है वह!' कश्मीर, शिमला, दार्जिलिंग और अन्य किसी ऐसी जगह की बात करें तो यही वाक्य मुंह से निकलता है। और किसी गांव की बात करें तो खेतों की हरियाली और घने पेड़ों की चर्चा किए बिना रहा हीं नहीं जाता।

पर क्या संसार भर की हरियाली, केवल सुंदरता की चीज़ है? आखिर यह हरियाली किस वजह से है? तुमने इन सवालों के बारे में कभी न कभी ज़रूर सोचा होगा। तुम क्या समझे या तुमने क्या निष्कर्ष निकाले, हमें भी बताओ।

चलो, आज इस हरियाली को थोड़ा और गहराई से समझें। खाने-पीने यानि भोजन से अपनी बात शुरू करें—आया ना मज़ा। क्या कोई भी प्राणी बिना भोजन के ज़िंदा रह सकता है? हम यहां कुछ समय की बात नहीं कर रहे हैं—बहुत दिनों की बात हो रही है। उत्तर सरल है—'नहीं रह सकता।' बिना भोजन के प्राणी मर जाएगा। पर यह भोजन आता कहां से है? तुम कहोगे खेत से अनाज आता है, फल और सब्ज़ियां बाग-बगीचों से। शहरों में ये चीज़ें दुकान से खरीदते हैं। पर यह तो हुई हमारे (मनुष्य के) भोजन की बात! बाकी प्राणियों के बारे में क्या ख्याल है? आओ एक कीड़े के भोजन से शुरुआत करते हैं।

कोसम का कीड़ा तुमने ज़रूर देखा होगा। लाल रंग का यह कीड़ा कोसम के पेड़ पर ही रहता है। इसका भोजन है इसी पेड़ की पत्तियां। इस पेड़ के आसपास कई अन्य पक्षी व जानवर जैसे कौवे, गौरैया, गिलहरी, गिरगिट या चूहे आदि रहते हैं। इनमें से कईयों का भोजन छोटे, कीड़े-मकोड़े हैं। तो बात साफ है कि कोसम का कीड़ा जिसका भोजन कोसम के पत्ते हैं, अपने आप गौरैया, कौआ या फिर गिरगिट का भोजन बन जाता है। चलो मानलें कि गौरैया ने कोसम का कीड़ा खा लिया। अब बारी है गौरैया की। गौरैया कितना भी फुदके सांप उसे खा ही लेता है। तो गौरैया बनी सांप का भोजन। अब तुम कहोगे कि भला सांप को भी कोई खा सकता है! ज़रूर.... चील, बाज, गरुड़ या मोर ऐसे पक्षी हैं जो सांप का भोजन करते हैं। चील, बाज और गरुड़ जैसे पक्षी तो चूहे, खरगोश यहां तक कि सियार, गीदड़ को भी अपना भोजन बना लेते हैं। यह भी संभव है कि सांप को खाने वाले इन पक्षियों को कोई अन्य जानवर अपना शिकार बना लें, जैसे बिल्ली कबूतर, तोते या मुर्गियों को पकड़ लेती है। इस तरह यह सिलसिला तो चलता ही जाता है।

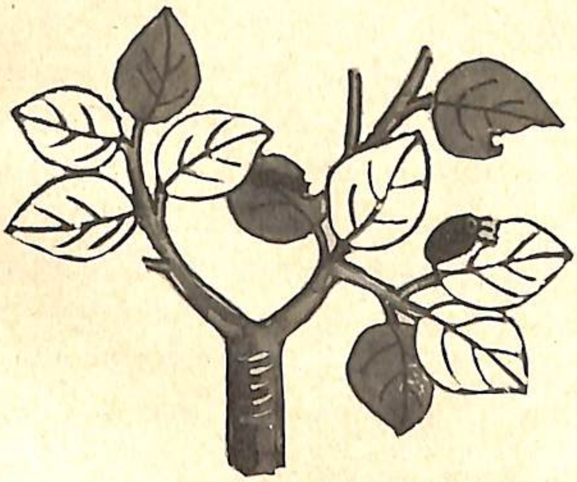

यह सिलसिला तो कोसम के कीड़े से शुरू होता है, यानी नीचे से ऊपर की तरफ। क्यों न ऊपर से नीचे की तरफ चलें। यह तो हम जानते ही हैं कि जंगल का सबसे ताकतवर प्राणी शेर या चीता होता है। अब सोचो शेर का भोजन क्या है? यही ना—हिरण, बकरी, सुअर, बंदर और दूसरे पालतू चौपाए! इनमें से हम हिरण और बकरे को लें—ये दोनों ही शाकाहारी हैं यानि केवल घास-पत्तियां खाते हैं। शेर का भोजन

ऐसा जानवर भी हो सकता है जो बकरी या हिरण को खा जाता है।

इसी तरह मनुष्य का भोजन परखें। कुछ मनुष्य केवल शाकाहारी होते हैं और कुछ शाकाहारी तथा मांसाहारी दोनों। शाकाहारी तो सीधे ही अपना भोजन अनाज, फल तथा सब्जियों के रूप में ले लेते हैं। पर मांसाहारी भोजन भेड़, बकरी, मुर्गा, मछली इत्यादि के रूप में मिलता है। लेकिन भेड़, बकरी या मुर्गा तो आखिरकार घास, पत्ती, अनाज पर ही जीवित रहते हैं।

तो विश्व के लाखों-करोड़ों जीव-जंतु जिन में मनुष्य भी शामिल है, लगातार वनस्पतियों को कचर-कचर खाते रहते हैं या उन जंतुओं को खाते हैं जो वनस्पति खाते हैं या उन जंतुओं को खाते हैं जो दूसरे जंतुओं को अपना भोजन बनाते हैं....

यानि, मतलब यह है कि जिस रूप में भी देखें प्रणियों को भोजन अंततः वनस्पतियों से ही प्राप्त होता है।

यह सब तो ठीक है पर भई हरियाली का क्या हुआ?

बस थोड़ा सब्र करो!

अभी सवाल यह है कि वनस्पतियों को भोजन कहां से प्राप्त होता है? ऐसा क्या खाते हैं वे, कि न केवल अपना पोषण कर सकें, बल्कि अन्य प्राणियों की भोजन की जरूरत भी पूरी कर सकें। ऊपर से देखने पर तो ऐसा लगता है जैसे पेड़-पौधे भोजन ही नहीं

करते। लेकिन फिर भी वे लगातार पैदा होते रहते हैं और बढ़ते रहते हैं। हां, एक बात हम ज़रूर जानते हैं कि उन्हें पानी देना पड़ता है और कभी-कभी खाद भी! पर क्या इसे उनका खाना या भोजन कह सकते हैं?

ऐसी स्थिति में यह बात समझना मुश्किल नहीं है कि लोग पहले यह मानने लगे थे कि पेड़-पौधे ज़मीन से ही भोजन ग्रहण कर लेते हैं। इस धारणा का सबसे पहले फिनलेंड देश के एक वैज्ञानिक ***हेलमों*** (सन् 1580-1644) ने निरीक्षण किया। हेलमों ने एक छोटा सा पेड़, जिसका वज़न लगभग 2 किलोग्राम था, एक बड़े गमले में उगाया। गमले में लगभग 100 किलोग्राम मिट्टी थी। पांच साल तक पेड़ को सावधानी से बढ़ने दिया। गमले की मिट्टी को ढक कर रखा था, ताकि उसमें वायु में उपस्थित मिट्टी के कण गिर कर वज़न न बढ़ाएं। सिर्फ पानी देते वक्त ही मिट्टी खुली होती। पांच साल के बाद हेलमों ने इस पेड़ को उखाड़ा। पेड़ की जड़ में लगी मिट्टी को पानी से धो लिया। पेड़ को तौला गया। पेड़ का वज़न लगभग 84 किलोग्राम हो गया था, यानि उसका वज़न 82 किलोग्राम बढ़ गया था। लेकिन मिट्टी का क्या हुआ? 100 किलोग्राम मिट्टी का वज़न 250 ग्राम से भी कम मात्रा में घटा था!

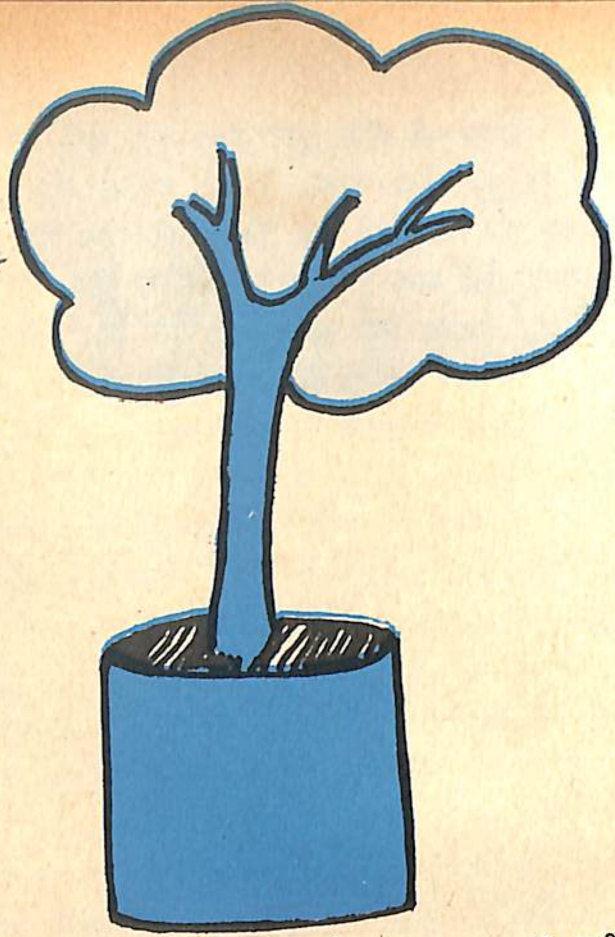

इस महत्वपूर्ण प्रयोग से क्या तय हुआ? यही ना कि ऐसा नहीं है कि मिट्टी ही पेड़-पौधों का भोजन है। हेलमों ने फिर यह अंदाज लगाया कि पानी भोजन का स्रोत होगा। क्योंकि यह सब जानते हैं कि पानी के बिना पेड़-पौधे मर जाते हैं। पर एक बात हेलमों भूल गए या यूं कहें कि उनका ध्यान उस तरफ नहीं गया। वह यह कि पेड़-पौधों के आसपास हवा भी रहती है। अब तुम कहोगे कि इस बात का क्या महत्व है, भूल गए तो भूल गए। क्या हवा खाकर भी कोई जीवित रह सकता है। अगर हम, हां कहें तो तुम हमें डंडा लेकर मारने तो नहीं दौड़ोगे! अच्छा चलो, हम एक और प्रयोग के बारे में बता कर अपनी बात समझाते हैं।

आप फिर प्रयोग की बात करने लगे, हरियाली का क्या हुआ?

बताते हैं.... थोड़ा धीरज और रखो! हरियाली के लिए ही यह सब बता रहे हैं!

प्रख्यात वैज्ञानिक ***प्रीस्टले*** (आक्सीजन को खोजने वाले) ने सन् 1771 में एक प्रयोग किया! एक चूहे को ऐसी जगह बंद कर दिया, जहां न हवा अंदर जा सकती थी न बाहर आ सकती थी। कुछ दिनों बाद चूहा मर गया। प्रीस्टले ने सोचा, चूहे की जगह पौधे को रखकर देखूं। अगर वह भी मर जाएगा तो यह

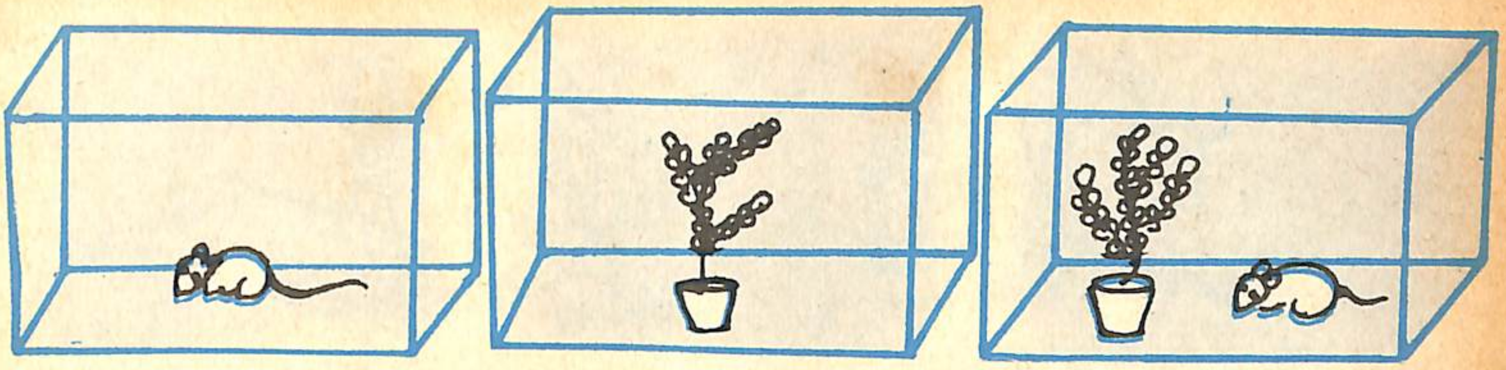

सिध्द होगा कि पौधा भी चूहे की तरह जीवित है। उस जमाने में यह नहीं माना जाता था कि पेड़-पौधों में भी जान होती है। क्योंकि धार्मिक ग्रंथ बाइबिल में ऐसा कहा गया है। प्रीस्टले ने पौधा रख दिया। पौधा नहीं मरा, वह दिनों-दिन बढ़ता ही गया। प्रीस्टले ने अब एक दूसरा चूहा पकड़ा और उसे उस पौधे के साथ रख दिया। यह चूहा पहले की अपेक्षा कुछ अधिक दिनों तक ज़िंदा रहा। इसका मतलब यह है कि पौधे की उपस्थिति से हवा में कुछ बढ़ोतरी या बदलाव हुआ था, जिससे चूहा अधिक दिन ज़िंदा रहा। हां, याद रहे यह प्रयोग करने तक प्रीस्टले को आक्सीजन के बारे में जानकारी नहीं थीं।

आज हमारे पास जो जानकारी है उसके आधार पर हम आसानी से यह कह सकते हैं कि प्राणी आक्सीजन का उपयोग प्राणवायु के रूप में करते हैं, जबकि पौधे इसे उत्पन्न करते हैं।

इसका सीधा.... सादा मतलब यह हुआ कि पौधे न केवल पूरे विश्व के भोजन का भंडार हैं, वरन् हमारी प्राणवायु आक्सीजन का भी एक स्रोत हैं। भोजन के बिना तो हम कुछ दिन ज़िंदा भी रह लें, लेकिन आक्सीजन के बिना तो चंद मिनटों में ही छुट्टी! अब सोचो, पौधे ना होते तो.... बाप रे बाप, जीवन संभव नहीं होता!

अभी भी हरियाली के बारे में जानना चाहते हो.... या यह समझना चाहते हो कि पौधों का रहस्य क्या है? वे भोजन और आक्सीजन कैसे पैदा करते हैं? क्या ये अलग-अलग क्रियाएं हैं या एक ही क्रिया के दो फल? अगर तुम्हारी जिज्ञासा अभी भी नहीं बढ़ी है.... तो ठीक है.... तुम्हारा भोजन.... सांस.... बंद!

नहीं.... नहीं! जिज्ञासा तो बढ़ी है लेकिन हरियाली....?

सुनो.... अभी पहेली का हल चल रहा है!

सन् 1779 में डेनमार्क के एक वैज्ञानिक ***यान इनगेन हाअज*** ने प्रीस्टले के काम के बारे में सुनने के बाद कुछ प्रयोग खुद किए, यह समझने के लिए कि पौधे हवा को शुध्द कैसे करते हैं। उन्होंने पाया कि पौधे केवल सूर्य के प्रकाश में ही आक्सीजन बनाते हैं, अंधेरे में नहीं।

इसी काम को आगे बढ़ाते हुए सन् 1782 में स्विटज़रलैंड के एक वैज्ञानिक ***ज्यां सेनिबियर*** ने पता लगाया कि इस काम के लिए केवल सूर्य प्रकाश ही नहीं, कार्बन डाइआक्साइड की ज़रूरत भी होती है।

इन सब निष्कर्षों से यह लगा कि हेलमों का प्रयोग दोहराया जाए। यह काम स्विटज़रलैंड के एक अन्य वैज्ञानिक ***डि-स्वासेर*** ने किया। उन्होंने पौधों को एक बंद वातावरण में उगने दिया। इस वातावरण में कार्बन डाइआक्साइड तथा सूर्य का प्रकाश भी मौजूद था। उन्होंने दो चीजें नापीं। एक यह कि कार्बन डाइ-आक्साइड कितनी कम हुई और दूसरे यह कि पौधे का वजन कितना बढ़ा। पौधे का वजन खर्च हुई कार्बन डाइआक्साइड से काफी अधिक था। डि-स्वासेर ने कहा कि बाकी हिस्सा वास्तव में पानी होना चाहिए। हेलमों का पानी का अंदाज इसलिए कुछ हद तक सही था।

इन सब बातों से एक बात तो बिलकुल साफ हो गई कि पौधे पानी, कार्बन डाइआक्साइड व सूर्य प्रकाश से भोजन और आक्सीजन बनाते हैं, यानि

सूर्य प्रकाश
\+ कार्बन डाइआक्साइड
\+ पानी
→ भोजन + आक्सीजन

इस तरह पौधे, अपनी और जीवों के जीवन की दो जरूरतों, भोजन और आक्सीजन को एक ही क्रिया में बनाते हैं।

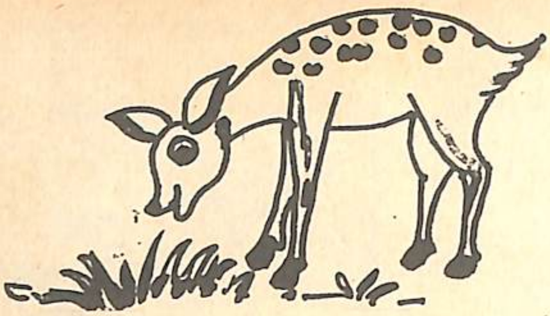

भई, यह बात तो बहुत गहरी कही, लेकिन अब अगर हरियाली का कारण नहीं बताओगे तो.... हम भी आगे नहीं पढ़ेंगे....!

अच्छा.... ठीक है! चलो समझते हैं। तो ज़रा गौर करो ऊपर बताई गई पौधों की क्रिया पर। कार्बन डाइआक्साइड और पानी मिलकर भोजन व आक्सीजन बनाते हैं। यह तो एक रासायनिक क्रिया है और इस क्रिया में काम आती है ऊर्जा। यह ऊर्जा कहां से आती है भला! ठीक समझे, सूर्य के प्रकाश से।

अब ज़रा सोच कर बताओ कि पौधे के कौन से भाग में यह क्रिया होती होगी!

तना?

गलत!

जड़?

अरे भई नहीं! यह क्रिया होती है पत्तियों में!

जी हां वही जो हरी होती हैं।

अहा! तो हरियाली की बात आ ही गई!

अब सूर्य प्रकाश से जो ऊर्जा मिलती है, उसको

ठीक ऐसे रूप में बदलने की जरूरत होती है जिससे कार्बन डाइआक्साइड व पानी से भोजन बने? यह काम पत्तों में ही छुपा एक पदार्थ करता है। इस पदार्थ का क्या रंग होगा, बता सकते हो?

हरा.... हरा.... अब समझ ली हरियाली!

ठीक.... यही हरा पदार्थ सूर्य का प्रकाश ग्रहण कर भोजन बनाने की प्रक्रिया संभव करता है।

अब क्या ख्याल है हरियाली के बारे में? क्या यह केवल सुंदरता की चीज़ है। अगर यह हरियाली देने वाला पदार्थ नहीं होता तो क्या जाने जीवन होता या नहीं और अगर होता तो कैसा!

एक मज़ेदार बात सोची है तुमने! हम आमतौर पर कहते हैं कि 'सब्ज़ी खा ली।' असल में 'सब्ज़' हरे का पर्यायवाची शब्द है। मूल रूप में यह उर्दू का शब्द है। इसी से बना 'सब्ज़ी'। तो बातचीत में भी हम इसी सब्ज़ी या हरियाली की बात करते हैं। जैसे यह हरा पदार्थ ही भोजन हो। पर ऐसा नहीं है, यह पदार्थ तो केवल भोजन बनाने का काम करता है। पर वास्तव में अगर यह न होता तो भोजन भी न होता।

इस हरे पदार्थ का नाम?

अब नाम में क्या रखा है। काम जानो तो, सब कुछ जान लिया। और फिर वैज्ञानिक नाम तो लंबे-चौड़े, रटने के लिए होते हैं। और रटना ज्ञान नहीं है। बात तो समझ से बनती है।

फिर भी.... नाम बताने में आप का क्या जाता है!

अच्छा.... तो फिर लो, रट लो.... क्लोरोफिल कहते हैं इसे! यानी हरियाली ही हरियाली का वैज्ञानिक रूप होगा क्लोरोफिल ही क्लोरोफिल।

नहीं जी.... हम तो समझ गए.... हमें तो हरियाली ही हरियाली पसंद है।

चित्रांकनः सुचिता पवार

कुर्रा का तुर्रा

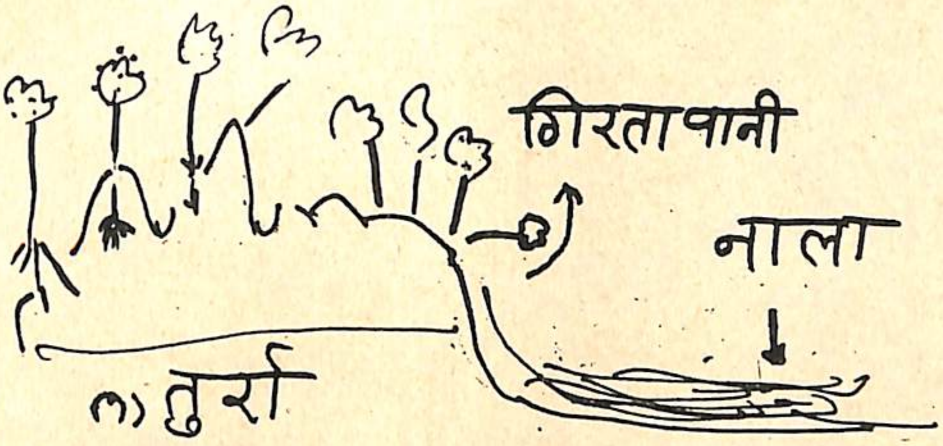

कुर्रा रायगढ़ जिले में लैलुंगा ब्लाक में राजपुर के पास एक छोटा गांव है। यहां एक छोटा सुंदर तुर्रा (प्रपात) है।

यहां घना जंगल है। बड़े-बड़े पेड़ हैं। इस जंगल में भालू बहुत ज्यादा हैं। भालू आए दिन आदमियों पर हमला करते रहते हैं। पिताजी बताते हैं कि यहां हर्रा, बहेरा, आंवला, अचार, गोंद खूब मिलता है। कोयला भी मिलता है। यहां के पत्थरों में लोहा मिला है। पहले यहां के लौहार लोग लोहा निकालते थे। अब नहीं निकालते हैं।

तुर्रा से थोड़ी दूर गुफा है। गांव के बूढ़े लोग कहते हैं कि द्वापर युग में भीम ने गदा मारकर इस गुफा को बनाया था। पर राजपुर के पुराने गौउटिया श्री हिम सागर बेहरा एक दिन पिताजी को बता रहे थे कि शायद पहाड़ों के नीचे पानी बहते रहने से मिट्टी कट जाने से गुफा बनी है।

गुफा बहुत गहरी (लंबी) है। पिताजी एक बार इसमें 10-15 मीटर तक गए थे। पर पवन (हमारे स्कूल का चपरासी) बता रहा था कि वह इस में 3-4 किलो मीटर दूर तक गया है। पहले गुफा चौड़ी है फिर कुछ दूरी के बाद सकरी है। आगे फिर चौड़ी है।

मैंने गुफा नहीं देखी। पिताजी जाने नहीं देते। कहते हैं कि वहां भालूओं का डर है। मेरा अंदाज है कि गुफा वैसी ही होगी जैसी मैंने चित्र में बनाई है।

□ राजा हेमंतसिंह, 9 वर्ष राजपुर (रायगढ़)

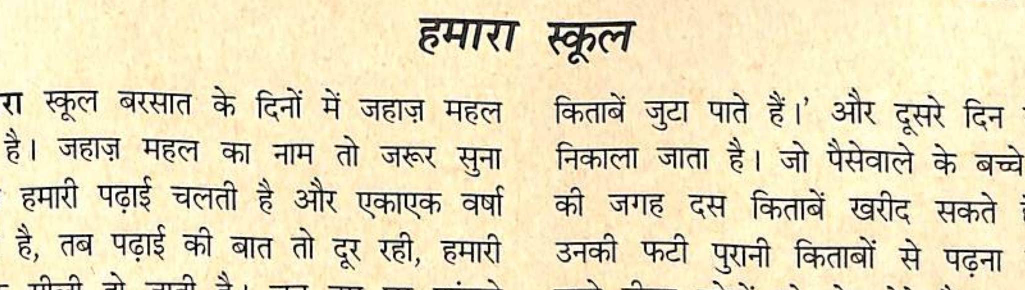

हमारा स्कूल

हमारा स्कूल बरसात के दिनों में जहाज़ महल बन जाता है। जहाज़ महल का नाम तो जरूर सुना होगा। जब हमारी पढ़ाई चलती है और एकाएक वर्षा होने लगती है, तब पढ़ाई की बात तो दूर रही, हमारी किताब तक गीली हो जाती है। जब हम घर पहुंचते हैं तो घर वालों की डांट, 'कहां गड्ढे में लोटके आया है, गधा कहीं का। रूखी सूखी खाकर तो तुम्हारी किताबें जुटा पाते हैं।' और दूसरे दिन स्कूल का पानी निकाला जाता है। जो पैसेवाले के बच्चे हैं वे तो एक की जगह दस किताबें खरीद सकते हैं। गरीबों को उनकी फटी पुरानी किताबों से पढ़ना होता है। गांव वाले टीचर लोगों को दोष देते हैं।

□ बद्रीलाल मुकाती, मानकुंड, देवास

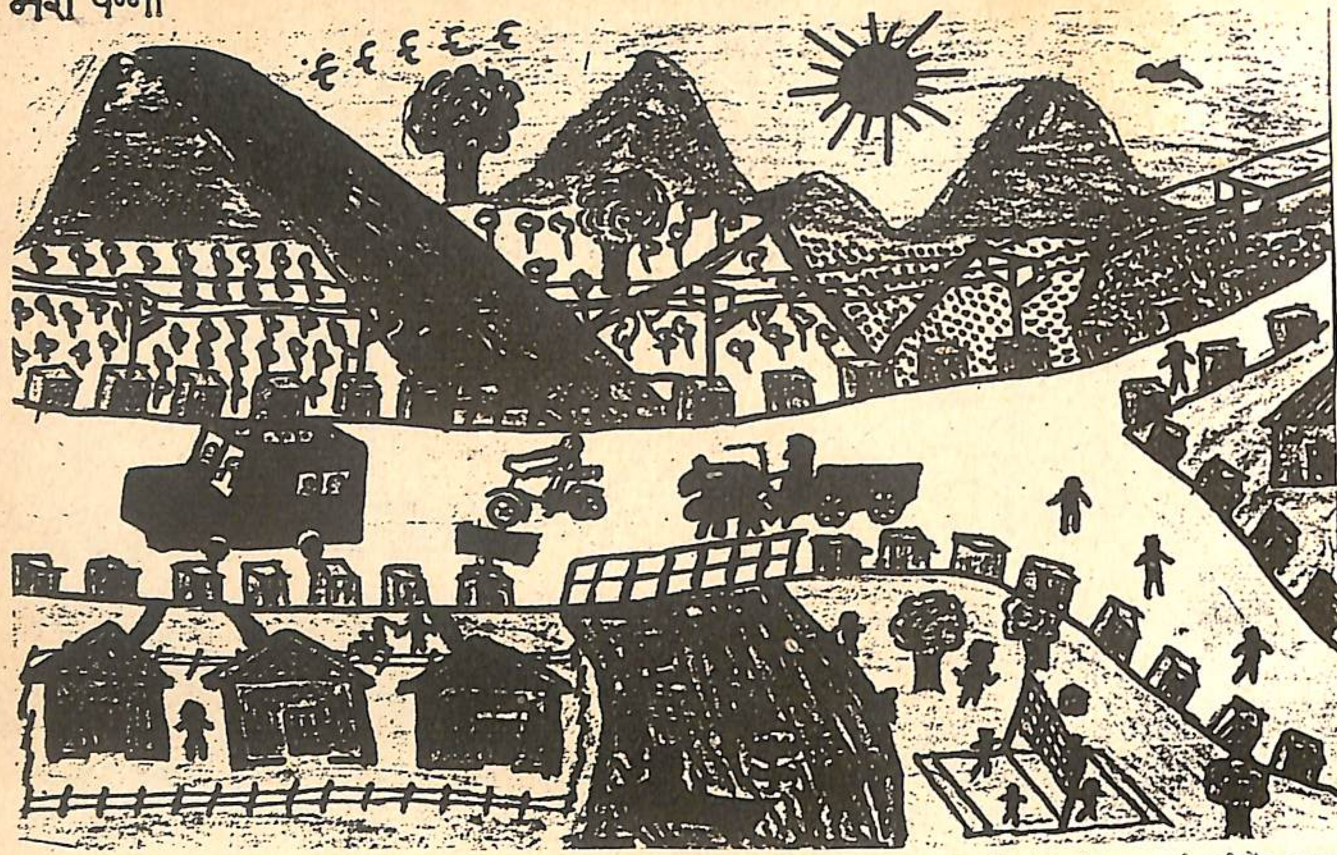

चित्रः शैलेन्द्र कुलश्रेष्ठ, 10 वर्ष, दहीकोंगा, बस्तर

एक सैर

चकमक पढ़ने वाले प्यारे दोस्तो, नमस्ते!

गरमियों की छुट्टियों में मैं ग्वालियर गया। वहां मैंने कई अच्छे अच्छे स्थान देखे। उनमें ग्वालियर का किला भी था। मैंने जो देखा उसे लिख रहा हूं। यह जानकर हंसी मत उड़ाना कि कुछ शब्द मां की सहायता से लिखे हैं।

ग्वालियर का किला काफी ऊंचाई पर है। मैं तो चढ़ते-चढ़ते हांफने लगा था पर ऊपर पहुंच कर शहर को देखा तो मजा आ गया। रेलगाड़ियां, बसें, टेम्पो, मकान सभी कुछ खिलौने से लग रहे थे। सबसे पहले मानमंदिर देखा। यह किले का सबसे सुंदर भाग है। पापा ने बताया कि यह राजा मानसिंह ने बनवाया था। इसी ओर कर्ण महल और शाहजहां महल बने हैं। पर मुझे सूरज कुण्ड पर मजा आया जहां हमने पके बेल खाए और पानी में तैरते हुए प्यारे से पक्षी देखे। यह कुण्ड राजा सूरजमल ने बनवाया था। यहां से थोड़ी दूर गुरुद्वारा है, बड़ा, ऊंचा और सफेद। मैंने उसे चूने से पुता हुआ समझा पर पापा ने बताया कि संगमरमर का बना है। वहां सिर ढकने के लिए रुमाल मिले। पैर तो सीढ़ियों पर चढ़ने से पहले भरे हुए पानी में धुल गए। गुरुद्वारे के भीतर पैर धोए बिना, नंगे सिर नहीं जाते। इसके बाद सास-बहू का मंदिर देखा। पापा ने बताया कि इसका सही नाम सहस्त्रबाहू का मंदिर है, बिगड़कर सास बहू का मंदिर हो गया है। इनके अलावा तेली का बाट, खंबा ताल, 64 खंबों की बावड़ी भी देखने लायक है। प्रसिद्ध सिंधिया स्कूल भी यहीं है। नीचे गेट के पास बने गुजरी महल को तो भूल ही गया जो बहुत अच्छे ढंग से बना है।

यहां पुरानी सुंदर मूर्तियां हैं। और हां, किले पर आप किसी मोटर या गाड़ी से घूम सकते हैं क्योंकि पूरे किले पर कोलतार की सड़क बनी है। गाड़ी लेकर पिछले गेट, 'उरबाई गेट' से आते हैं।

अच्छा दोस्तों इस पत्र में इतना ही लिख रहा हूं।

□ प्रशांत कुलश्रेष्ठ, पांचवीं
तिलोंजरी (मुरैना)

खेल खेल में कला

विष्णु चिंचालकर

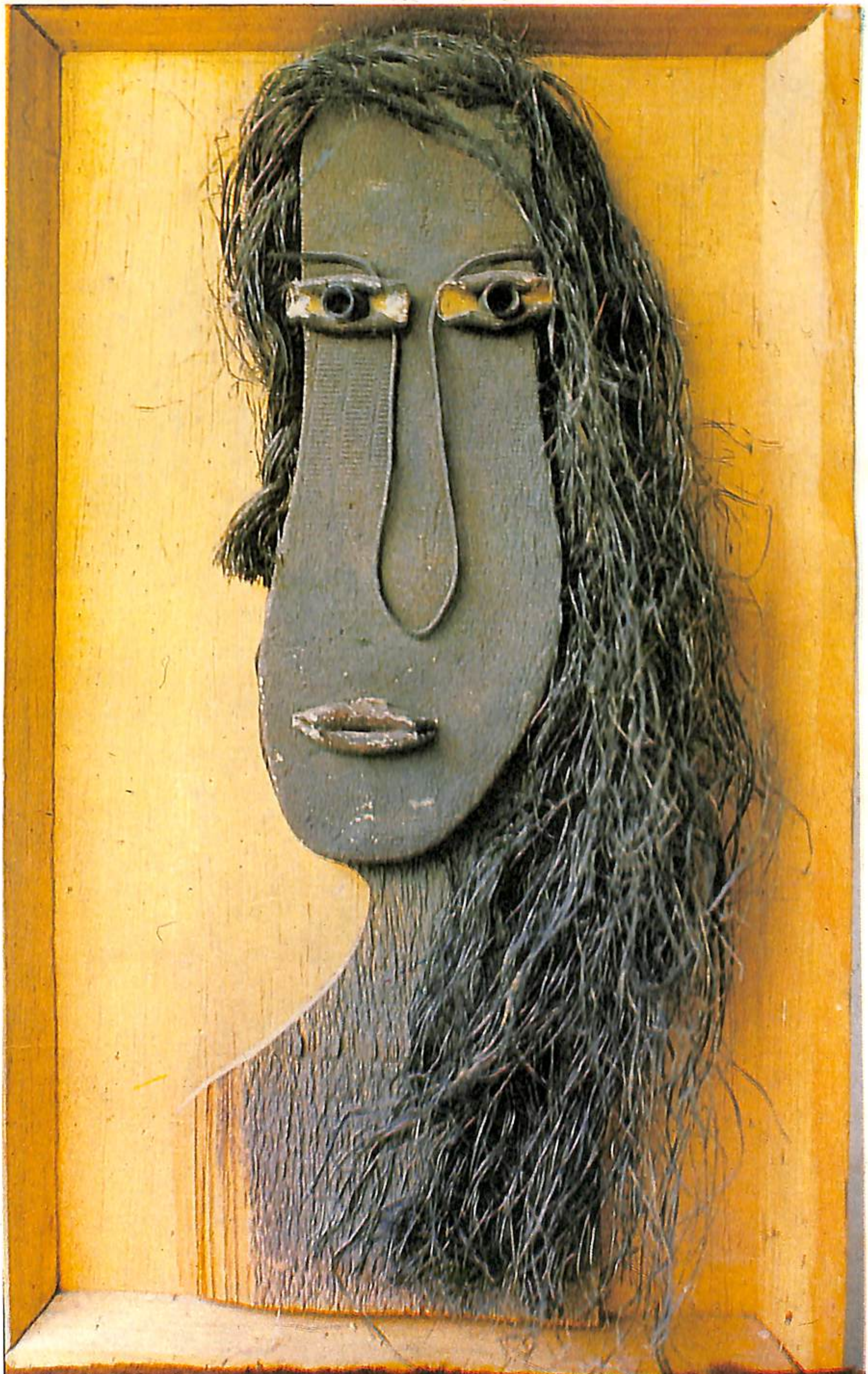

यह है हमारी 'मोनालिसा'। पिछले अंक की गुड़िया की अम्मा जी। जिन चीज़ों से बनी है वे सारी तुम्हारी जानी पहचानी हैं, फिर भी पहचानने का प्रयास करो।

गुरूजी के सभी चित्रों के छायाकारः निहाल चंद जैन, इंदौर

जंगल से गुजरते कुछ यात्री।

जब बड़ी चीज़ों की ओर हमारा ध्यान नहीं जाता तब छोटी-छोटी चीज़ों का क्या अता पता? सुपारी की इन बारीक कतरनों को देखो तो उनमें छुपी हुई कुछ महिलाएं दिखाई देंगी, जो आपस में गपशप में मगन हैं।

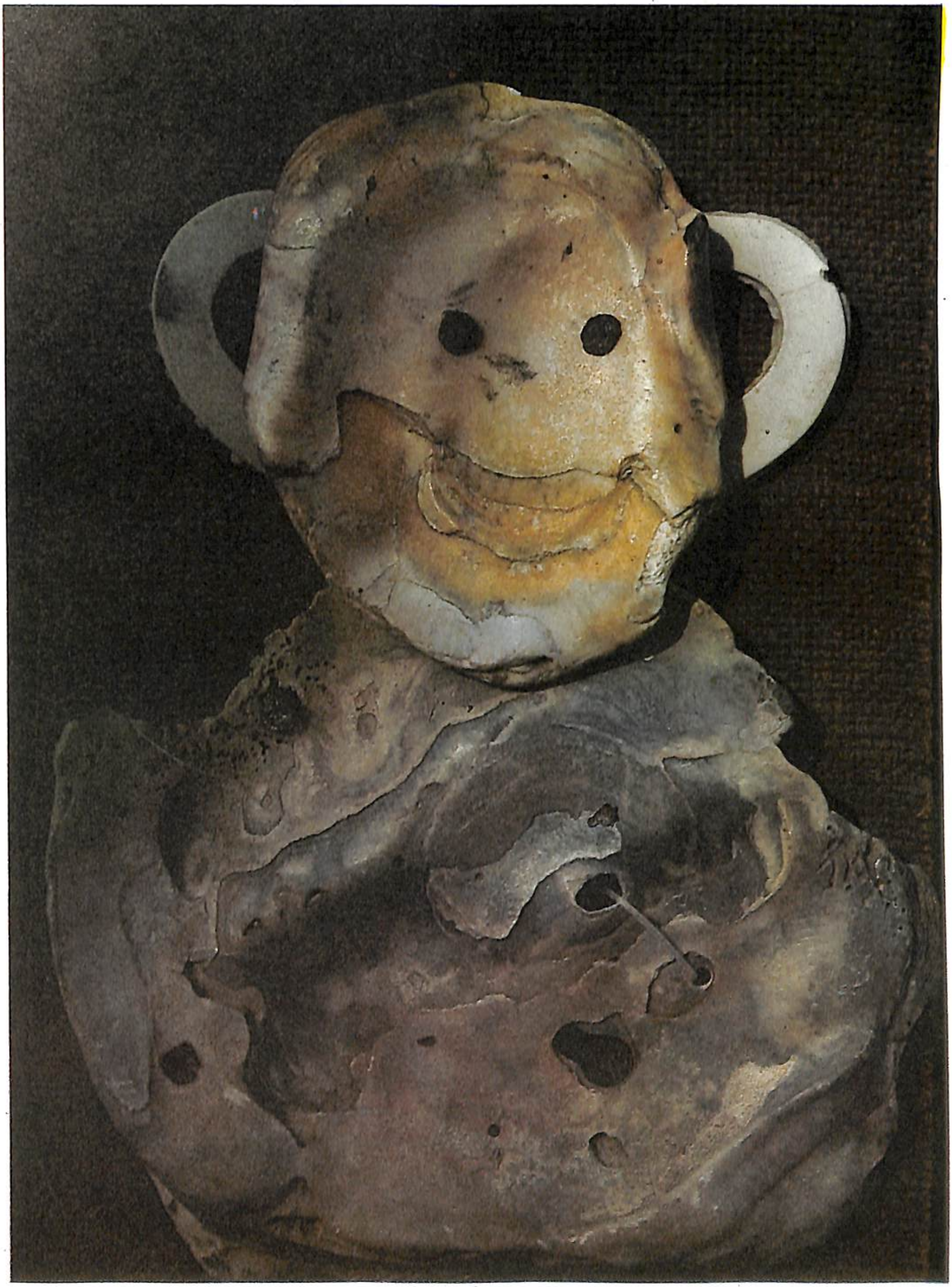

नदी किनारे शंख और सीपियां तो तुमने बटोरी ही होंगी। क्या कभी उसमें इस प्रकार मुस्कुराता बंदर दिखाई दिया?

गुरुजी के दो चित्र

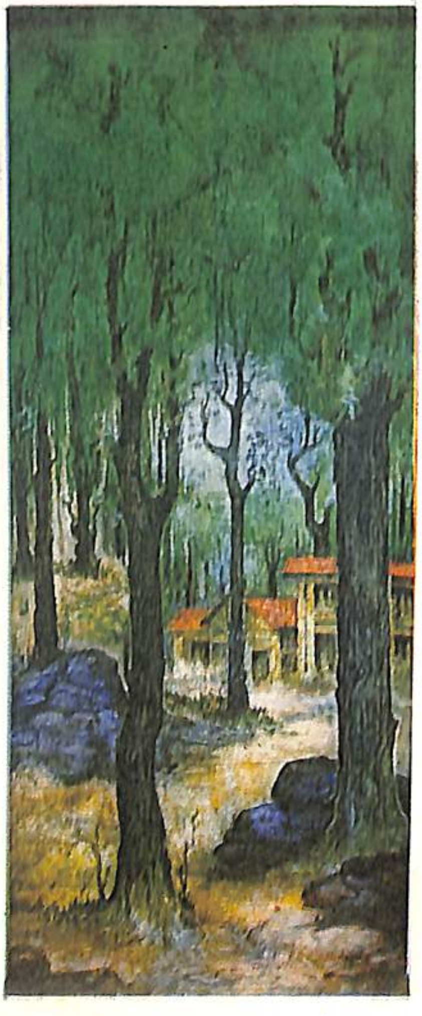

अभी तक तुमने गुरुजी विष्णु चिंचालकर की ऐसी कलाकृतियां देखीं जो उन्होंने 'खेल खेल में' ही बेकार चीजों तथा सूखे फूल-पत्तों से बनाई हैं।

गुरुजी एक अच्छे चित्रकार भी हैं। रंग और ब्रश से उन्होंने कई सुंदर चित्र बनाए हैं। उनके ऐसे ही दो चित्र यहां दिए गए हैं।

पहला चित्र बनारस का है। बनारस की मशहूर गलियों में से एक में से गंगा का दृश्य।

दूसरा चित्र कान्हा के घने घने जंगल का है। कान्हा मध्यप्रदेश में स्थित राष्ट्रीय उद्यान है। यहां वन्य प्राणियों के लिए एक सुरक्षित क्षेत्र बताया गया है।

जैसा तुम देख सकते हो कि दोनों चित्र किसी यात्रा से प्रेरित हैं।

माथापच्ची

(1)

देश के लाखों बाल श्रमिकों की तरह धन बहादुर एक सेठ की दुकान पर काम करता था। सेठ काम तो खूब करवाता था पर पैसे कंजूसी से देता था।

एक बार सेठ ने धनबहादुर को 100 कांच के गिलास दूसरी दुकान पर पहुंचाने को कहा। साथ में अपनी कंजूसी भरी शर्त भी रखी। हरेक गिलास सही-सलामत पहुंचने पर 3 पैसे मिलेंगे और हर टूटे हुए गिलास पर 6 पैसे कटेंगे। माल पहुंचाने पर धन बहादुर को रुपए 2.40 मिले। बताओ रास्ते में कितने गिलास टूटे?

(2)

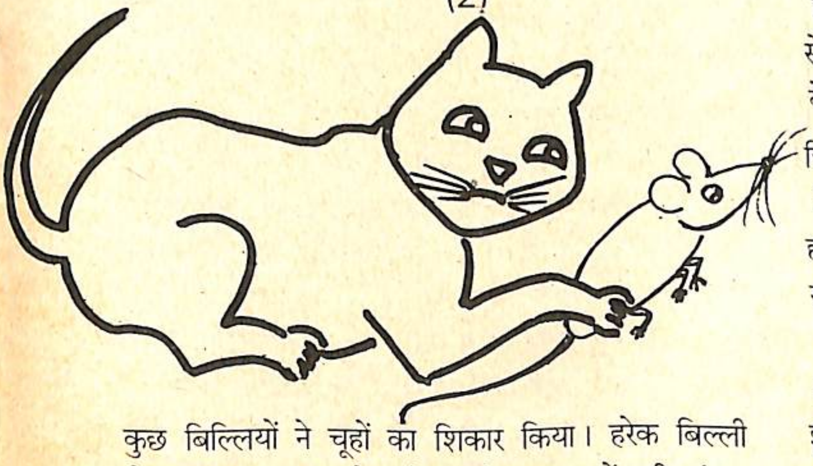

कुछ बिल्लियों ने चूहों का शिकार किया। हरेक बिल्ली ने बराबर-बराबर चूहे मारे। मारे गए चूहों की संख्या 999919 है।

बताओ, बिल्लियों की संख्या?

(3)

8 सरल रेखाओं से क्या तुम 2 वर्ग और 4 समकोण त्रिभुज बना सकते हो?

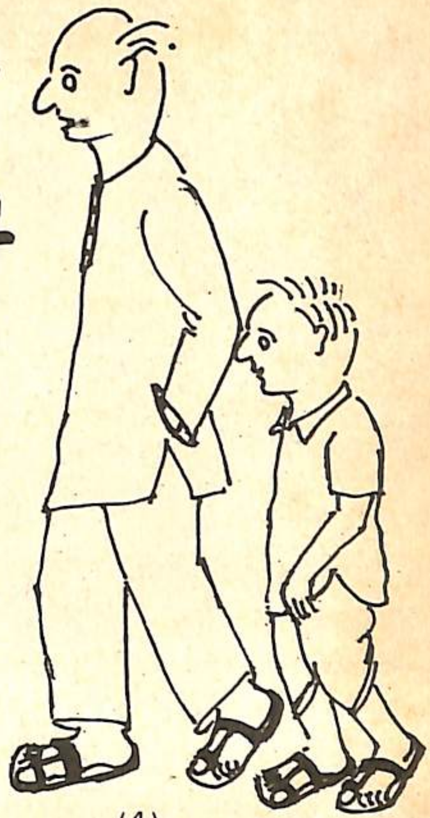

(4)

दो व्यक्ति हैं एक ऊंचे कद का और दूसरा ठिगना। ऊंचे व्यक्ति के दो कदम, ठिगने व्यक्ति के 3 कदमों के बराबर हैं। दोनों साथ चलना शुरू करते हैं, बाएं पांव से। उनके कितने कदमों के बाद दोनों के दाएं पांव एक साथ उठेंगे?

(5)

चिंटू और हमीदा कंचे खेल रहे थे। हमीदा ने चिंटू से कहा, अगर तुम मुझे एक कंचा दो तो हम दोनों के पास बराबर कंचे हो जाएंगे।

चिंटू ने झट जवाब दिया, अगर तुम मुझे एक कंचा दे दो तो मेरे पास तुमसे दुगने कंचे हो जाएंगे। कोई हमें यह बताए कि उन दोनों के पास कितने-कितने कंचे रहे होंगे?

(6)

अब दो ऐसी संख्याएं बूझो जिनका अंतर 3 हैं और इनके वर्गों का अंतर 51।

(7)

एक डिब्बे में हरे, पीले और नीले रंग के चार-चार, यानि कुल 12 कंचे हैं। अगर तुम्हारी आंख पर पट्टी बांध दी जाए और कहा जाए कि डिब्बे से एक ही रंग के दो कंचे एक-एक करके निकालो तो तुम्हें कम से कम कितने कंचे निकालने होंगे?

(8)

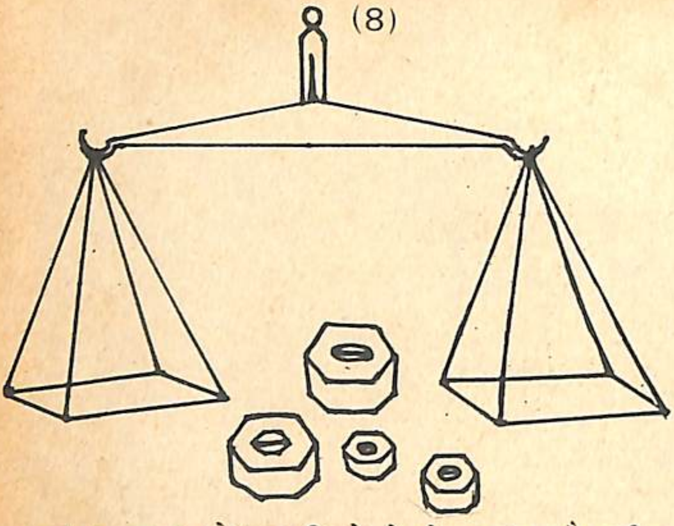

एक दुकानदार को एक किलो से लेकर एक सौ इक्कीस किलो तक का वज़न तोलना पड़ता है। बताओ वह कम से कम कितने बांट रखे ताकि वह एक से लेकर एक सौ इक्कीस किलोग्राम तक के किसी भी वज़न को किलोग्राम इकाई तक तोल सके?

(9)

एक ऐसी संख्या है जिसका दुगना उसके आधे से 45 बड़ा है। खोजो तो जरा इस संख्या को?

(10)

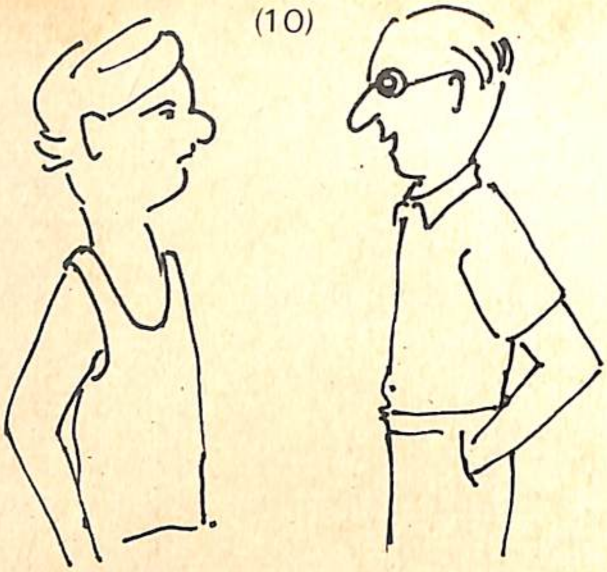

एक किसान से एक शहरी व्यक्ति ने थोड़ी अकड़ से पूछा, "हूं, तुम्हारे पास कितनी बकरियां और मुर्गे हैं?"

किसान ने विनम्रता से उत्तर दिया, "जनाब मेरे पास जितनी बकरियां और मुर्गे हैं उन से कुल 60 आंखें और 86 पांव बनते हैं?"

शहरी ठंडा पड़ गया और हिसाब लगाने लगा। चलो तुम्हीं बताओ कितनी बकरियां और मुर्गे रहें होंगे किसान के पास?

वर्ग पहेली : कुछ संकेत

अगस्त माह की वर्ग पहेली तुम लोगों ने हल करने की कोशिश तो जरूर की होगी। इस कोशिश में कितने सफल हुए, यह तुम यहां दिए सही हल से मिलाकर देखो। पर एक बात हम जरूर कह सकते हैं, तुम्हें मज़ा आया होगा। असल में, वर्ग पहेली का मतलब होता है कि दिए गए संकेत में से ही सही शब्द ढूंढ निकालना।

वर्ग पहेली-1: हल

1 हा	थी	2 के	दां	3 त		4 त	मा	5 चा
शि		श		[illegible]		ट		ली
6 या	द		7 म	छ	ली		8 ब	स
		9 ज		टी		10 सु		चो
11 खे	ती	बा	ड़ी		12 ब	रा	ब	र
स		न		13 घ		ही		
14 री	छ		15 आ	रो	प		16 खा	17 क
दा		18 धा		ह		19 मा		ल
20 ल	की	र		21 र	म	ता	जो	गी

कई बार तो संकेत पर्यायवाची शब्द के रूप में होते हैं। इनसे तो मात्र अपनी याददाश्त पर जोर डालकर सही शब्द निकाला जा सकता है। परंतु वर्ग पहेली का असली मज़ा तो उन संकेतों में है जिनमें कहीं कुछ जोड़तोड़ करके, किसी कहावत/मुहावरे के आधार पर या फिर किन्हीं दो शब्दों को जोड़कर सही शब्द निकालना होता है।

ऐसे सारे संकेतों में कई बार पूरे वाक्य का अपने आप में कोई अर्थ नहीं होता। ऐसे संकेत वाक्यों में एक हिस्सा हमेशा वह होता है जिससे शब्द के अर्थ का पता चलता है। दूसरे हिस्से से शब्द की रचना मालूम पड़ती है।

कुछ संकेत होते हैं जिनमें शब्द अपने मूलरूप में होते हैं। जैसे 'मकबरा बरगद में ऊंच नीच नहीं।' 'ऊंच नीच नहीं' में मूल शब्द का पर्यायवाची अर्थ है। यहां छिपा हुआ शब्द 'बराबर' है।

दूसरे तरह के संकेत वे हैं जिनमें कुछ शब्दों

के अक्षरों को फिर से जमाकर ऐसा शब्द बनाना होता है जिसका अर्थ दिए गए अर्थ से मेल खाए। जैसे 'रोध हर की गड़बड़, अमानत' यहां 'रोध' और 'हर' इन दो शब्दों के अक्षरों (रो, ध, ह, र) को फिर से जमाकर ऐसा शब्द बनाना है जिसका अर्थ अमानत हो। यह शब्द 'धरोहर' है। इस प्रकार के संकेत में गड़बड़, गोलमाल, उलजलूल आदि शब्दों के प्रयोग से बताया जाता है कि किन शब्दों में जोड़तोड़ करना है।

एक संकेत था, 'आप के बीच आधी रोटी का आक्षेप'। आधी रोटी अर्थात् 'रो' (यानि उस शब्द का आधा) को आप के बीच (अर्थात् 'आ' और 'प' के बीच) में रख देना है। क्या बना?

एक प्रकार के संकेत होते हैं जिनमें दो शब्द दिए होते हैं। इन दोनों शब्दों के अर्थ वाला एक तीसरा शब्द ढूंढना होता है। जैसे कृषि औजार, समस्या का निराकरण। यह शब्द है 'हल'। अब तुम्हीं सोचो कैसे।

शब्द पहेली के सभी प्रकार के संकेतों के बारे में तो तुम्हें यहां बता नहीं सकते। पर मुख्य बात यह है कि संकेत का हर शब्द महत्वपूर्ण होता है। उसे ध्यान से पढ़ो, जैसा लिखा है वैसा करो तो शब्द आपोंआप सामने आ जाएगा। हां, एक बात और, वाक्य में जो कोमा आदि लगाया जाता है उंसका भी महत्व है। संकेत वाक्य पढ़ते समय उसका भी विशेष ख्याल रखना।

बूझो तो

दो अक्षर का मेरा नाम
खाने के आता हूं काम
खूब सलोना मेरा चाम
नाम बताओ मिले इनाम।

ooo ooo

चार माह तक मेरा जीवन
रहता है भरपूर
ज्यों ही जाती ऋतु वर्षा है
घट जाता तब पूर।

ooo ooo

साढ़े तीन कलम लंबाई
इस इंद्रिय का हूं मैं गोला
अगर कहीं कोई पूंछ को काटे
संत सभी ने मुझको बोला।

ooo ooo

वर्ग पहेली : 2

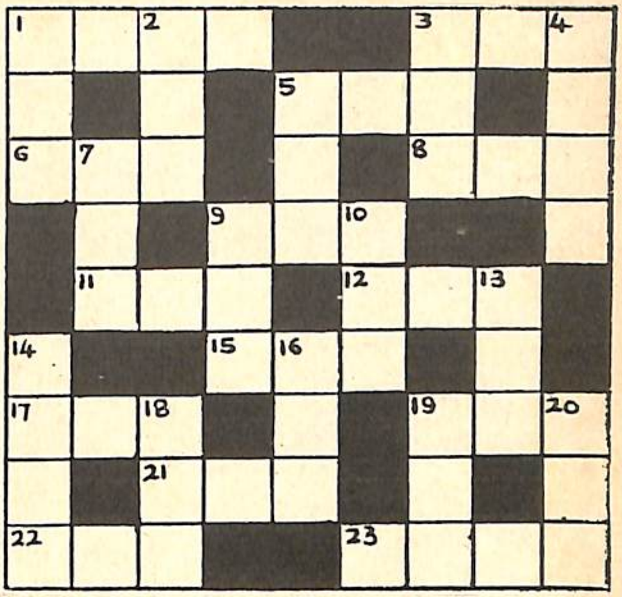

संकेत : *बाएं से दाएं*

1. मसालेदार (4)
3. ताश के खेल में ----- के पत्तों का महत्व बढ़ जाता है (3)
5. बीमार की सेवा (3)
6. नौकर (3)
8. उलजुलूल कमर या पूंजी (3)
9. बुनियाद मिलेगी आधा रटाने में (3)
11. भारी भरकम रावण में रहने की जगह (3)
12. प्रतिवाद करने में संगीतकार (3)
15. रूठे हुए को खुश करना (3)
17. पढ़ना या बांचना (3)
19. नमस्कार, डूबते सूरज को (3)
21. राम के ससुर (3)
22. बतला उल्टा सीधा पीटकर बजाने योग्य (3)
23. ताकतवर (4)

संकेत : *ऊपर से नीचे*

1. रसोई में चाटुकार (3)
2. फटा हुआ दूध, सिर कटे तो पानी बने (3)
3. पाला (3)
4. मध्यप्रदेश का पर्वतीय स्थल (4)
5. सहूलियत (3)
7. कसकर पकड़ने में दर्द दिल का! (3)
9. हराम है यह (3)
10. यात्रा शुरू (3)
13. कौन करे लाजवन्ती में छिपे फल की खोज? (3)
14. शादीशुदा (4)
16. नाक में अंतहीन विष का खिवैया (3)
18. आधा नहीं जला पर बीमारी तो है (3)
19. कामयाब (3)
20. मन का उलजुलूल घर (3)

बारिश की रात में

बारिश की रात में
तूफान की मारी
गली में हारी बैठी चिड़िया को
बिजली की चमक में, मैं देखता हूं
और उठाकर घर ले आता हूं

उसे आग के पास सुखाता हूं
पुचकारता हूं, दुलराता हूं
उसका सिर सहलाता हूं
मुझसे डरती नहीं है चिड़िया
बार बार दुबकती है मेरे हाथों में

उसे अच्छे लगते हैं
मेरे गरम हाथ

रात भर सोएगी नन्हीं चिड़िया
मेरे साथ मेरे कमरे में
फिर उड़ जाएगी सुबह

फुररर्र करके
खुले आकाश में
भूल जाएगी
पल भर में
बीते तूफान को

जान पर आए खतरे को
याद करेगी
[illegible] कभी
मेरे [illegible] हाथों को?

□ रुस्तम

कुण्डली कैसे घूमी?

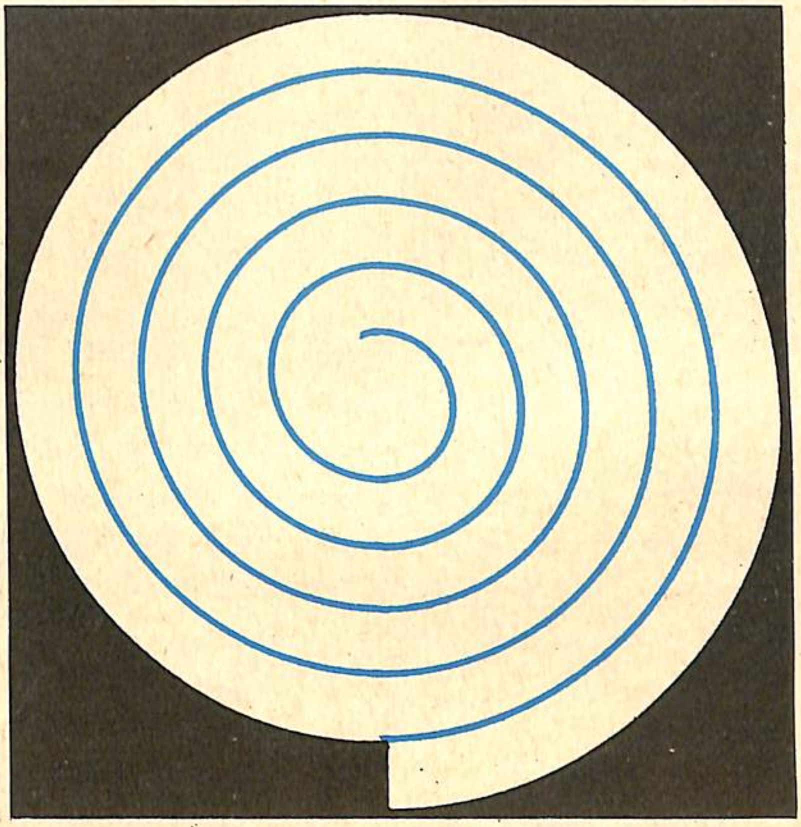

मोटे कागज (कार्ड शीट) का 10 वर्ग सेंटीमीटर का एक टुकड़ा लो। इसके बीचोंबीच एक छोटा-सा छेद बना लो। इस छेद के आसपास चित्र में दिखाई गई कुण्डली बना लो। चाहो तो तुम इसके लिए परकार की सहायता ले सकते हो।

कैंची की मदद से कागज को रेखाओं पर सावधानी से काट लो। एक धागा बीच के छेद से पिरोकर एक तरफ गठान लगा लो। अब चित्र में दिखाए तरीके से धागे का दूसरा सिरा पकड़कर उठाने पर कागज की कुण्डली जैसी रचना मिलेगी।

इस कुण्डली को एक जलती हुई मोमबत्ती या लैंप के ऊपर लटकाओ, पर ध्यान रखना यह आग न पकड़ने पाए। देखो क्या होता है। कागज की कुण्डली गोल गोल घूमने लगती है। इससे तुमने क्या जाना और क्या समझा?

जिराफ

सामग्री—पुराने अखबार, पीला पतंगी कागज, झाड़ू की सीक, काली स्याही।

सबसे पहले अखबार को काटकर 5 से.मी., 14 से.मी., 17 से.मी. और 28 से.मी. चौड़ाई के नाप से कई सारी लंबी पट्टियां बना लो। झाड़ू की सीक के भी इसी नाप के टुकड़े कर लो। अब कागज की पट्टियों को उनकी नापों की सीक पर कसकर लपेटो और आखिर के छोर को गोंद से चिपका लो ताकि एक मोटी सी कागज की छड़ी बन जाए। ध्यान रखना झाड़ू की सीक बाहर न निकले। हर सीक पर तब तक पट्टियां चिपकाओ जब तक वह 2 से.मी. मोटाई की छड़ी न बन जाए। इस तरह तुम्हारे पास **(अ)** 5 से.मी., **(ब)** 14 से.मी., **(स)** 17 से.मी. और **(द)** 28 से.मी. की चार छड़ियां होंगी।

अब **ब** और **स** छड़ियों को बीच से मोड़ दो। **अ** छड़ी को दोनों छोरों से 2-2 से.मी. की दूरी पर मोड़ दो। **द** छड़ी को एक छोर से 4 से.मी., 16 से.मी. और 24 से.मी. की दूरी पर मोड़ दो। यानी कि पहले और दूसरे मोड़ के बीच की दूरी 12 से.मी. और दूसरे और तीसरे मोड़ के बीच की दूरी 8 से.मी. होगी।

इसके बाद **स** छड़ी को बीच से मोड़ कर सुई धागे से, **अ** छड़ी के दूसरे मोड़ पर, कस कर सी दो ताकि वह वहां मजबूती से बना रहे। इसी तरह **ब** छड़ी को भी बीच से तीसरे मोड़ पर और **अ** छड़ी को पहले मोड़ से थोड़े आगे जोड़ दो।

अब हमारे जिराफ का ढांचा तैयार है। अब अखबार की 3 या 4 से.मी. चौड़ाई की पतली-पतली पट्टियां काटकर जिराफ के दूसरे और तीसरे मोड़ के बीच कसकर लपेटो ताकि जिराफ कुछ मोटा तगड़ा हो जाए। उसका पेट करीब 2.5 से 3 से.मी. मोटा होना चाहिए। जिराफ की गर्दन पर इस तरह पट्टियां चढ़ाओ कि उसकी मोटाई, पहले मोड़ से दूसरे मोड़ तक, क्रमशः 1 से.मी. से धीरे-धीरे बढ़कर 2.5 से.मी. हो जाए।

इसके बाद पीले पतंगी कागज की पट्टियां काट कर पूरे जिराफ पर चढ़ा दो और काली स्याही से असली जिराफ के शरीर की तरह, पास-पास, धब्बे बना दो। जिराफ के मुंह पर आंखों को अच्छे से बनाना ताकि वे धब्बे में न मिल जाएं।

इसी तरीके से हाथी, मुर्गा, शुतरमुर्ग, ऊंट इत्यादि जानवर भी बनाओ और उनके बारे में हमें लिखो।

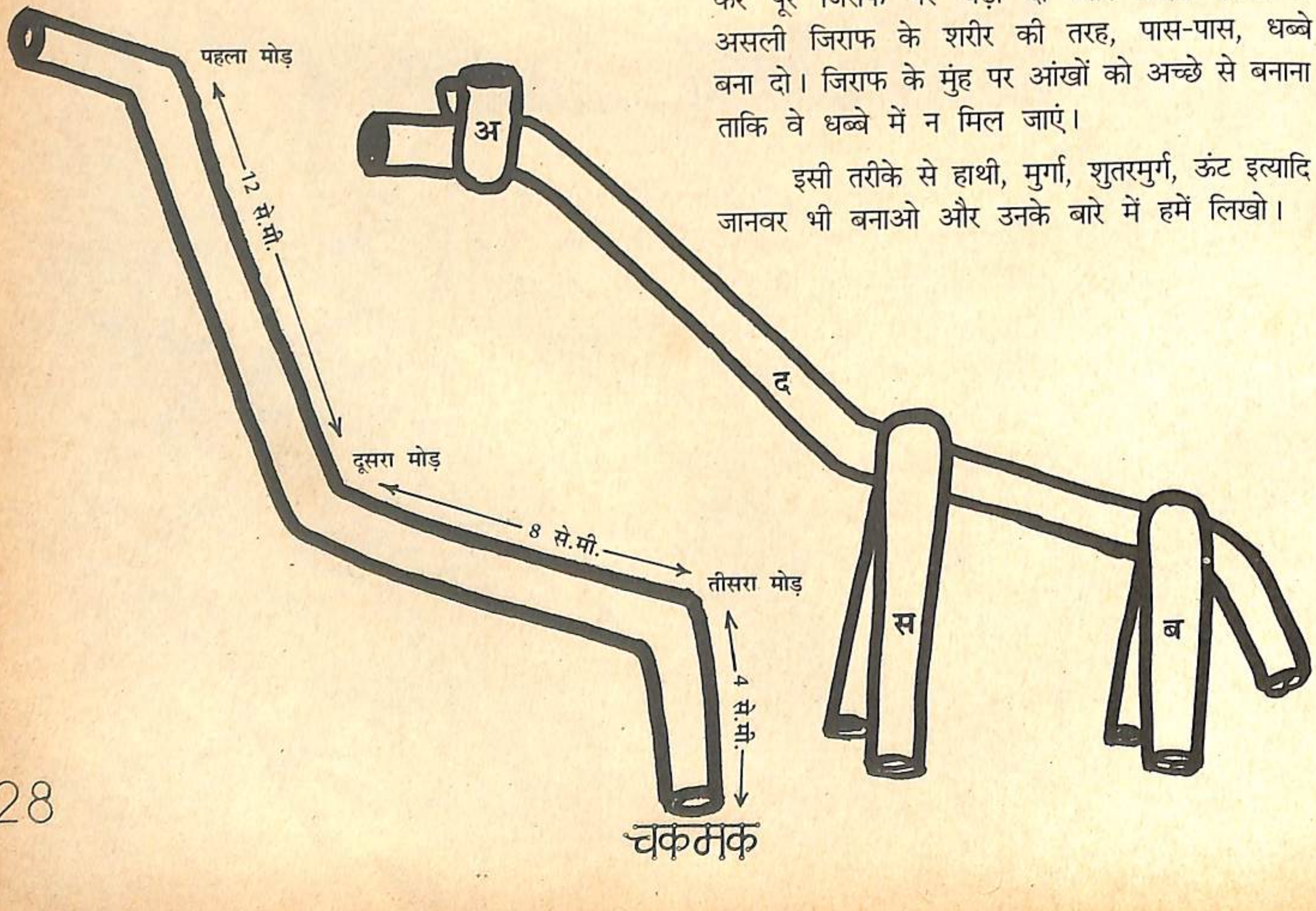

अनमोल अठन्नी

सूरज जैसी गोल अठन्नी,
एक गुड़िया का मोल अठन्नी।

श्रम करके जीना सिखलाती,
कितनी है अनमोल अठन्नी।

बच्चे एक दिन बूढ़े हो जाते,
रहती है सुडौल अठन्नी।

कभी बनी इतिहास जहां का,
और कभी भूगोल अठन्नी।

कितने सारे जेब बदलती,
किसकी है तू बोल अठन्नी।

□ राही रोशन

कबूतर

आसमान का नूर कबूतर,
उड़ने में मशहूर कबूतर।

घुटर-घुटर घूं गाना गाता,
गाने में है चूर कबूतर।

नाच-नाच कर बच्चों का मन,
बहलाता भरपूर कबूतर।

कंकर, पत्थर भी खा जाता,
खाने में है शूर कबूतर।

चिट्ठी-पत्री ले जाने में,
करता कितना दूर कबूतर।

ऊंचे आसमान में उड़कर,
जाता कितनी दूर कबूतर।

□ जमना प्रसाद 'जलेश'

चित्र: विवेक

वर्षगांठ

□ मनोहरसिंह 'मधुप'

अभी छः भी नहीं बजे थे कि हमें पिताजी ने, रजाई झटक कर, उठा दिया। 'उठ जाओ बेटा, आज तुम्हारी वर्षगांठ है।'

झटककर उठा दिए गए थे, इसलिए हम रूष्ट थे। किन्तु हमारी नाराजगी ज्यादा समय तक टिक न सकी, क्योंकि आंगन में मौलसिरी के पेड़ पर, खपरैल लांघते हुए, दो-तीन बंदर आ बैठे थे और किकिया रहे थे। हमने तुरंत अपनी छोटी, दो-वर्ष की, बहन बेबी को आवाज दी, 'बेबी, बेबी! देख बंदर।'

मां के कानों तक आवाज पहुंच गई, इसलिए वे तुरंत यह कहती हुई निकल आईं, ' प्रात लेय जो नाम हमारा, ता दिन ताहि न मिले अहारा।'

यह चौपाई पहले भी एक से अधिक बार माता मुझे सुना चुकी थीं और इसका अर्थ भी समझा चुकी थीं। किन्तु मैं था कि मुझे सवेरे-सवेरे बंदर का नाम लेने की टेब-सी पड़ गई थी।

आज अपनी वर्षगांठ के दिन मैंने सवेरे-सवेरे बंदर का नाम ले लिया, सो मां ने न केवल उपदेश दिया बल्कि कुछ रूठ भी गईं। बेबी को मुझसे खेलने नहीं दिया। अभी वे गईं भी नहीं थीं कि जिज्जी आ पहुंची। जिज्जी हमारी समझदारी की खान हैं और अक्ल की पुतली। आते ही कहने लगी, 'भैया! तुझे क्या सिखाया था मैंने? याद है, गए साल जन्मदिवस की। फिर अभी-अभी कल शाम की। याद है अरे पाजी! मां-बाप के चरण हम छोटे थे तो रोज सुबह छूकर आशीर्वाद लेते थे। तू सालगिरह को तो किया कर।'

अब ये लोग हमें इतना बेवकूफ समझते थे कि कल शाम सिखलाई हुई बात को भी हम भूल जाते। फिर हम अब आठ वर्ष के हुए। दकियानूसी खयालों को, कि बंदर का मुंह देखने से और उसका नाम लेने से खाना न मिलेगा, कैसे मान लें? मां और बहन दोनों की बातें हमें बुरी लगीं। इसलिए हमने ठान ली, अच्छी बात है। ये लोग जब हमें इतना मूर्ख समझते हैं तो हम भी अब उन्हें मूर्ख होकर ही दिखलाएंगे। सो हमने न तो माता के पैर छुए, न पिता के और न किसी और के। जिज्जी बेचारी है किस खेत की मूली। यह भी तय कर लिया कि आज से उसे नाम से ही शांति या शंतू कहा करेंगे, जिज्जी नहीं! ले तू और कर मेरी चुगली!

बेबी के साथ खेलने को न मिलने से हमने अपने घरेलू टेलीफोन के 'रिसीवर' सिगरेट के वे डिब्बे खोजना शुरू किया जिनमें धागा डालकर टेलीफोन की रचना की गई थी। बड़ी छानबीन के बाद कहीं वे हाथ लगे। एक में छेद इस कदर बड़ा हो गया था कि कितनी ही बड़ी गांठ लगाकर ठहराने पर भी धागा ठहरता नहीं था। निकल-निकल जाता था। हम उसे सुधारने में लगे थे कि इस शंतू की बच्ची जीजी ने आकर बखेड़ा कर दिया। बोली, 'तू आज भी दस बजे तक नहीं नहाएगा? मंदिर कब जाएगा? पूजा में कब बैठेगा और पढ़ेगा

कब? और मास्टरजी के घर प्रणाम करने कब जाएगा।' और जाने क्या क्या? साथ ही उसने हमसे कई सवाल पूछ डाले।

हमें बड़ा बुरा लगा। कहां तो हमारी वर्षगांठ और कहां इस तरह का सम्मानहीन जीवन! अरे! इनकी टूटी तिपाई को भी हाथ न लगाओ, जैसे उसमें कुछ खाना हो और इनकी रत्ती भर गोंद को भी न बिगाड़ो! वाह भाई वाह! इसी का नाम आठवें वर्ष की साल-गिरह! पकड़कर जैसे भी खंजड़ से रगड़-रगड़ कर नहलाएं वैसे नहा लो, पहिनाएं वैसे उनकी पसंद के कपड़े पहन लो। फिर बैठकर उनके हाथ से मिठाइयां खा लो जिससे उसे भी खूब डकारने को मिल जाए, और अपने को मिले वर्षगांठ के इनाम के रुपए उनके पास जमा करा दो, तब तो शांता जीजी के राजा भैया बड़े अच्छे और नहीं तो बहुत खराब! कितनी स्वार्थी दुनिया है।

हम टूटी-फूटी, जंग खाई हुई, कड़ाही को भी नहीं छू सकते; टूटी तिपाई को सुधारकर भी काम में ला नहीं सकते; अपने सिगरेट के डिब्बों से बना लिए गए टेलीफोन को भी हिफाजत से इस घर में कहीं नहीं रख सकते। इसकी बनिस्बत तो कहीं चला जाना भला।

और चला ही जाना चाहिए, तभी इन्हें मजा आएगा और मालूम होगा कि राजा भैया की मलामत करना कितना बुरा होता है।

इन दिनों राजसागर का मेला लगा हुआ था। हमने सोचा, वर्षगांठ का दिन और मेले की सैर अच्छी रहेगी। किन्तु मेले-ठेले में किसी दोस्त और पैसे के बिना मन लगना मुमकिन नहीं। पैसे अपने थे ही कितने? फिर अकेले कुछ खर्च किया भी जाए तो उसका सुख नहीं मिलता। किन्तु आज मेरे साथ आता भी कौन? सभी स्कूल को गए हुए थे। हमको वर्षगांठ होने से छुट्टी थी, इसलिए हमीं अकेले थे।

हमने सोचा, चिड़चिड़ी बहन के साथ खेलने से तो अकेले खेलना ही अच्छा! आज छुट्टी है तो है। हम भी इन्हें दिखा देंगे कि हमसे दांता-किलकिल करने का नतीजा कितना बुरा होता है। इसलिए हमने न खाया, न पिया और नेकर और कमीज पहने ही, पांव में जूता डाल चल दिए। सीधे निकल गए प्ले ग्राउण्ड के उस पार।

वहां पश्चिम ओर से स्टेशन को जाने वाली सड़क पर। सड़क बनाने वाला हाथी-एंजिन गिट्टी तोड़ रहा था और सड़क बना रहा था। छूं छूं छूं छूं-छक-छक-छक करते हुए एंजिन के साथ-साथ हम दो-तीन बार उधर से इधर और इधर से उधर आए गए। फिर कुछ देर क्वार्टरों के सामने के आंगनों में लगे गुलाब के गमलों में खिल फूलों को देखकर मन बहलाया और तब दिल में कुछ ऐसी तरंग उठी कि झील की ओर चल दिए।

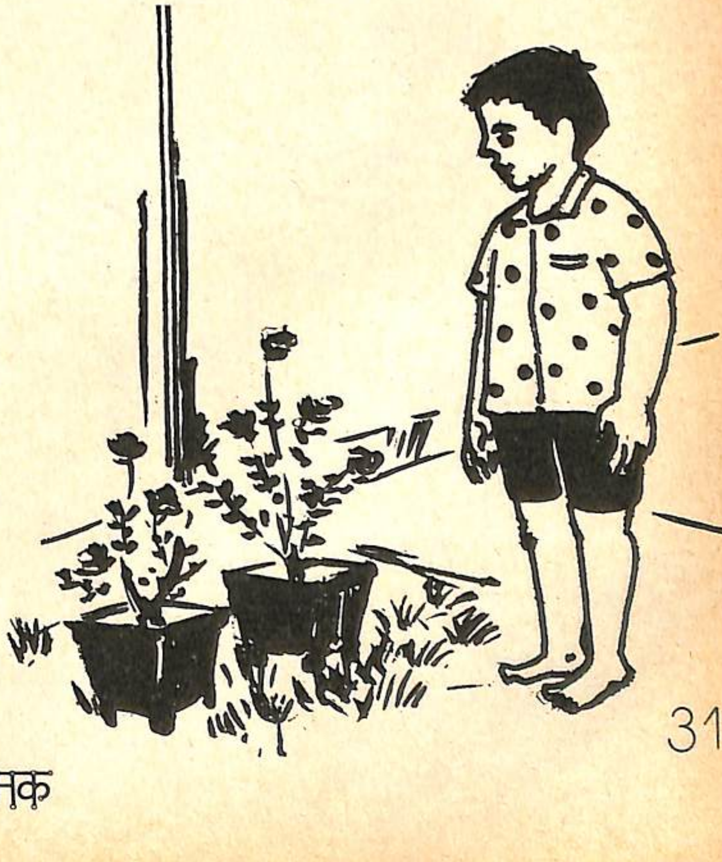

झील चारों ओर टेकड़ियों से घिरी हुई है। एक ओर को जमीन काटकर रेल की लाइन निकाली गई है। पास ही नाला बहता है जिस पर होकर, पुल पार करके, रेल जाती है।

पहले तो हमने सोचा कि आज गाड़ी आएगी तब तक पुल के नीचे चले चलेंगे और फिर घर जाकर इस सच्ची घटना को सुनावेंगे कि आज तो हम पर होकर रेल निकल गई। फिर, जब सब चकित होकर अविश्वास करेंगे तो कह देंगे, बस इतने में चकरा गए! अरे, तब हम पुल के नीचे खड़े थे, समझे! हा! हा! हा!

करीब दोपहर हो गई होगी। हम समझ रहे थे कि कैसे हमें शांता जीजी इधर से उधर मकान के कमरे-कमरे में और पड़ोसियों के यहां ढूंढ़ रही होगी। फिर स्कूल तक मित्रों और मास्टरों के घर तक नौकर से ढूंढ़ खोज करवा कर सब थकहार कर आंसू बहा रहे होंगे कि हाय! आज वर्षगांठ के दिन राजा भैया कहां गया। स्वयं पिताजी ने दफ्तर पुर्जा भेज दिया होगा कि अस्वस्थता के कारण आज आफिस में न जाएंगे या साफ ही लिख दिया होगा कि लड़का खो गया है इसलिए आज रुखसत चाहता हूं। गरज यह कि सब पछता रहे होंगे और बैठकर आंसू बहा रहे होंगे। पछतावे ने सबके मन को धो पोंछ कर साफ कर दिया

होगा और सब सोच रहे होंगे कि राजा भैया आएं तो उसे सब कोई प्यार ही प्यार करेंगे। एक ही तो लड़का है।

ऐसे-ऐसे खयाल हमारे मन में आ रहे थे और घर वाले अफसोस में जैसे हमारी आंखों के ही आगे बैठे थे। यह हम घर से तीन-चार मील दूर जंगल में खड़े कल्पना से साफ-साफ देख रहे थे।

तभी हमें खेल का एक साथी मिल गया। हमको खेलने के लिए ऐसा काफी चुस्त दुरुस्त साथी मिल गया जिससे मिलते ही हम दूध में शक्कर की तरह घुल गए।

इस दोस्त के हाथ में एक रबर की रस्सी के टुकड़े का चाबुक था जिसे वह बिजलीघर के रबर के तार में से काटा हुआ बताता था। इसी की एक मोटी-सी गुच्छी इसकी जेब में ठुसी हुई थी जिसमें से कि एक बड़ा-सा टुकड़ा काटकर हमें देने का इसने दिलासा दिया।

हम कब कोरे दिलासे से तसल्ली करनेवाले थे। हमने उसके हाथ की रस्सी को थामा। वह मौका ही देख रहा था। उसने दबाकर जो रस्सी को खींचा तो हमारे हाथ में कांपा पड़ गया। निशान उभर आया। चमड़ी उधड़ते उधड़ते रह गई। हम खिसिया गए। किन्तु इतनी-सी बात से चिढ़ना तो होशियार और हमारी उम्र के बालक को शोभा नहीं देता था।

हमारे इस व्यवहार से यह लड़का बहुत खुश हुआ। बेशक बहादुर ही बहादुर की कद्र करते हैं। उसने हमें अपना पक्का और गहरा मित्र बना लिया। अब हम किसी खेल की तलाश में चले।

हमारे नए मित्र ने अपनी बहादुरी और हुनर की लंबी-लंबी डींगें हांकी और अपने आपको सांप और बिच्छू पकड़ने में उस्ताद बताया। हम तो जान गए कि कुछ नहीं, यों ही रौब जमा रहे हैं हजरत; पर उसने तो तुरंत ही बिच्छू पकड़ने के लिए टेकड़ी पर, जहां वह कहने लगा कि बिच्छुओं का घर है, जाने का सुझाव रक्खा। हमने ज्यों-त्यों बात टाली कि छोड़ भाई, आज वर्षगांठ के दिन कौन पाप करे। अगर यही मन्शा है तो और किसी दिन देखेंगे।

इस पर हमारे बहादुर साथी ने कहा कि अच्छा चलो, रेल की पटरी-पटरी कौन दौड़ सकता है। बंबई-दिल्ली लाइन पर, बंबई की ओर मुंह करके, एक पटरी पर वह और समानांतर दूसरी पटरी पर हम दौड़ने

लगे। होड़ में दोनों एक दूसरे से कम उतरनेवाले न थे। हर मिनिट होंठ, ठोड़ी और दांतों को दबाकर दौड़ रहे थे और मुट्ठियों को कसकर बंद कर लिया था। पांव जमाकर सीधे पटरी पर डाल रहे थे। जूते दोनों ने पीछे ही एक नीम के पेड़ के नीचे खोल दिए थे। आखिर हम रुके। अरे बहुत दूर निकल गए और कहीं कोई जूते उठाकर चलता हुआ तब?

हम देख रहे थे कि हमारे मित्र को हमारे बराबर दौड़ने में उतनी ही मशक्कत और दिक्कत पेश आ रही

थी जितनी हमको उससे बराबर आगे हो जाने की कोशिश करने में। पर, हम आगे न हो सके। हमारा रुकना उसे बहुत पसंद आया।

लौटते समय फिर भी होड़ लगी रही। हम दौड़े चले आ रहे थे कि दूर ही से क्या देखते हैं कि पेड़ के नीचे से एक काली-काली चीज मुंह में लिए एक कुत्ता भागता जा रहा है। कुत्ता कहीं से कुछ पकड़ लाया होगा या कोई चिथड़ा लेकर भागा होगा। किन्तु जूता ले कर भी तो भाग सकता है। यह खयाल आते ही ऐसी व्यग्रता ने हमारे ध्यान में गड़बड़ी पैदा की कि पटरी पर बंधी हमारी निगाह बिचक गई। पैर बिदक गया और हम अपने दौड़ते हुए साथी को झपेट में लेते हुए लाइन पर गिर पड़े। हमें गिरते हुए देख, झपेट में आकर भी हमारा मित्र संभलकर हाथों के बल गिरा और हम हाथ फैलाए हुए भी लाइन पर मुंह के बल गिरे जिससे ठोड़ी में चोट आई और निचले दांतों ने ऊपर के होंठ में काटकर खून बहाने के लिए काफी जख्म कर दिया।

हमने दिल को बहुत कड़ा रक्खा। मुंह से उफ भी न की, क्योंकि होड़ और खेल में कोई बहादुर रोता नहीं है। फिर भी आंखों से आंसू टपके बिना न रहे। हमारा साथी हाथ पकड़कर हमें नल तक ले गया। हमने कुल्ली की, फिर अपने जलते हुए होंठ को चाटते रहे।

एक्सप्रेस गाड़ी का समय हो गया था। थोड़ी देर में गाड़ी की धड़धड़ाहट सुनकर मेरा मित्र मुझे खींचता हुआ किनारे पर चढ़ गया और पटरी के पास लगे सिगनल खींचने के तारों के नजदीक ले जाकर खड़ा हो गया। हमने बड़े मजे से खड़े होकर गाड़ी देखने का निश्चय कर लिया। किन्तु गाड़ी इस कदर धड़धड़ाती हुई और झपटती हुई आई कि हमसे हवा की थप्पड़ सही न गई और हम घुटनों के बल झुक

कर बैठ गए और बैठे ही बैठे पीछे हट गए। वहीं बैठे-बैठे हमने एक अनोखी रीति से हाथ हिलाकर दूर-दूर के जिलों और प्रान्तों से आने वाले मुसाफिरों का स्वागत किया।

एक सन्नाटा छोड़ती हुई गाड़ी निकल गई। हम उठ बैठे। जाकर देखा तो जूते ज्यों के त्यों रक्खे थे। फिजूल ही दांत तुड़वाए।

हमने सोचा कि इस साथी का साथ खराब है। पहले तो हमें यह बिच्छू पकड़ने ले जा रहा था। अगर हम गए होते तो क्या ताज्जुब कि दो-तीन रोज हाथ-पैर में डंक का दर्द, सूजन लिए घूमना पड़ता। इस आदमी के साथ रहकर कुछ न कुछ अमंगल इस शुभ दिन कहीं हो ही न जाए। इससे बेहतर है कि इसका साथ छोड़ दिया जाए।

हमने उससे बहाना किया कि हम अपने पिता के दफ्तर होते हुए घर जाएंगे। अब हमें छुट्टी दे। उसकी नजर से ओझल होकर हम सड़क पर टनल (बोगदा) बनाकर बनाए गए रेलवे पुल के नजदीक बैठ गए। यहां एक खेल में हमारा मन बहल गया।

जमीन में जाली लगाती हुई लोहे की छड़ें समानांतर लगाकर एक वर्गाकार छलनी-सी बनाकर बरसाती पानी को नाली में निकाल देने का प्रबंध किया गया था। इसी छलनी के ऊपर बैठकर हमने उसकी चौड़ी-चौड़ी सलाखों के बीच पैर डाल कर नीचे झुला दिए और बैठकर दिन भर की घटनाओं के विषय में सोचने लगे। सोचा, हमारी तलाश में दिन भर निकल गया होगा। यहां से कोई दो-सौ कदम के फासले पर ही पिता का दफ्तर था। पुल के मोड़ के कारण वह दीखता नहीं था। पिता जरूर ही दफ्तर न आए होंगे। आए भी होंगे तो अब घर लौटकर दूनी चिन्ता से हमें खोजने निकले होंगे। संध्या को हम घर पहुंचेंगे तब

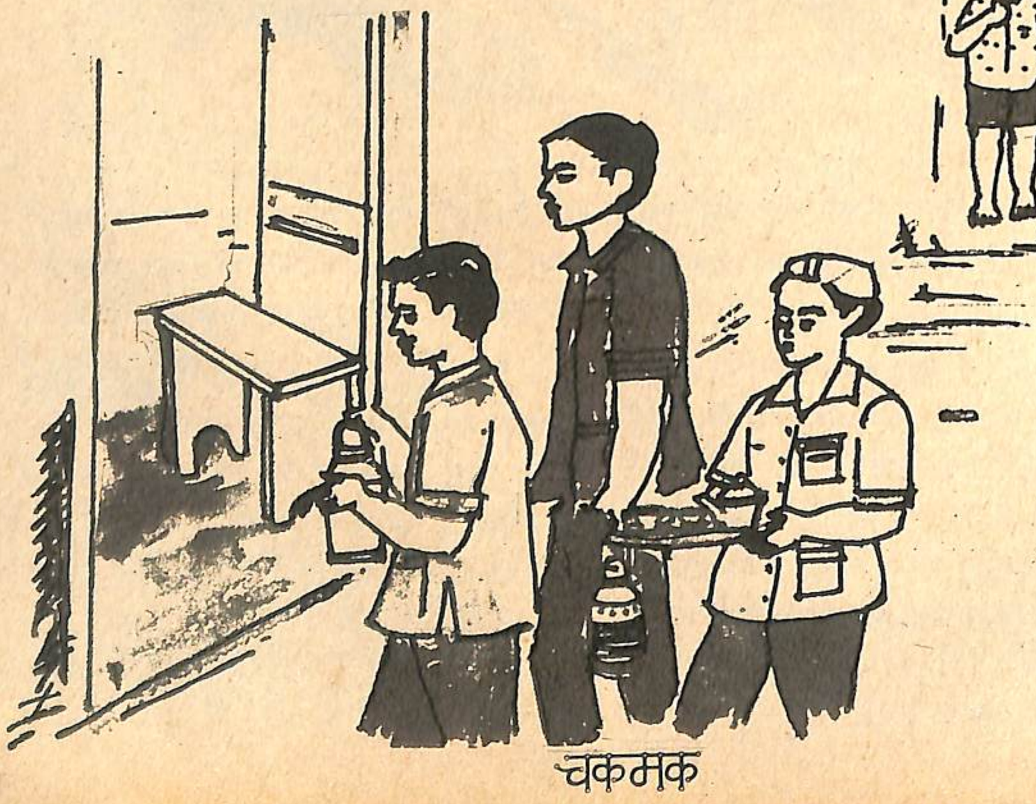

सभी हम से माफी मांगेंगे और प्यार से बहन. हमें तिलक करेगी, फिर माला पहनाएगी और फिर मिठाइयां खाने को देगी, क्योंकि आज हमारा जन्मदिन था।

सोचकर हम उठने लगे कि अब सांझ हुई, घर चलें। भूख भी कसकर लग आई थी। पेट को हमने देखा तो पीठ से सटा जा रहा था।

हमें बड़ा अचरज लगा जब हमने लौटती बेर पिता के दफ्तर का दरवाजा खुला देखा और एक-दो बैरों और चपरासियों को थरमस उठाए दफ्तर के फाटक की ओर जाते देखा। अगर शाम हो गई तो फिर ये लोग दफ्तर में बाबू लोगों के घरों से चाय क्या टेबल-कुर्सी को पिलाने के लिए ले जा रहे होंगे। कुछ दूर गए तो हमें दूर से पिता की पीठ दिखाई दी। बेशक पिताजी घर को चले जा रहे थे और दफ्तर से ही जा रहे थे। जरूर शाम हो गई थी, इसमें इंच भर का भी संदेह अब नहीं रहा।

घर पहुंचा तो देखता क्या हूं कि पिताजी कपड़े खोलकर जरा सुस्ता रहे हैं। बहन ने मुझे देखते ही कहा, 'लल्ला! चलो फौरन नहा लो। रसोई बन गई है। आज तुम्हारा जन्मदिन है। कहां निकल गए थे? पिताजी का पूर्णिमा का व्रत है। एक बार ही तो आज हम सब खाएंगे। तुम चाहे तो शाम को फिर खा सकते हो। किन्तु अब तक यों भूखे-प्यासे अपनी शान लिए कहां निकल गए थे? चलो इधर को। पिताजी देखेंगे तो मुझ पर खफा होंगे कि लड़के को कोई संभालता नहीं।

पिताजी सुन लेते तो खफा होते, इसलिए हमें गम खानी पड़ी। क्योंकि मामले को शांताजी भैंस के सींग की तरह बढ़ाए जा रही थीं।

कहां तो मैं समझता था कि शाम हो गई होगी और कहां अभी क्लाक में दो ही बजे थे। दफ्तरों को थरमस में जानेवाली चाय का भेद अब मुझे मालूम हुआ। पिताजी सत्यनारायण का व्रत पूर्णिमा को रखते थे और आधा दिन दफ्तर करके चले आते थे।

हमारी की हुई सब तपस्या बरबाद हो गई। सुबह से भूखे-प्यासे, मारे-मारे फिरे, शैतान लड़के से भाई-चारा किया, दौड़े-धूपे, दांत तुड़वाए और सारा दिन दुपहर बाहर पूरा करके लौटे लेकिन घर के लोगों के कानों पर जूं तक न रेंगी। रेंगती कैसे? वर्षगांठ की और व्रत-उपवास तथा रसोई-भोग की तैयारी में सब लगे थे। हमारी पूछ किसे थी? हमारी चाह का वक्त आया तो हम दुनिया भर की खाक छानकर ऐन वक्त पर लौट आए।

स्पष्ट है कि हम थोड़ी-सी जल्द-बाजी से हार

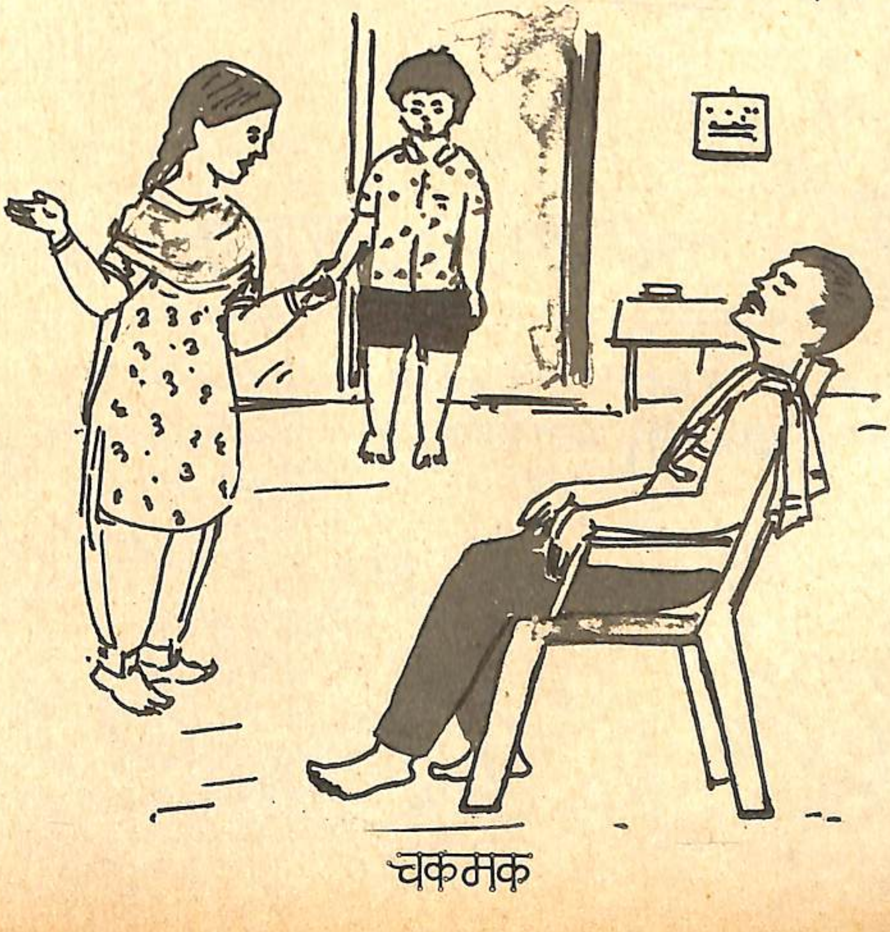

गए थे और विजयश्री घरवालों की सिपहसालार शांता दीदी के हाथों रही थी जिसने हमारी इस बदला लेने की भावना को जानकर हम पर खूब कसर निकाली। मतलब यह कि साबुन तो मला थोड़ा और खूब खंजड़ रगड़-रगड़ कर हमें नहलाया। सिर में तेल क्या मला हमारी कनपटी और खोपड़ी को भन्ना कर रख दिया और उस पर तुर्रा यह कि एक लाल रोली का तिलक हमारे माथे पर कर दिया। फिर जबरन अपने हाथों मिठाई हमारे मुंह में ठूंसने की मशक्कत में यह भी देख लिया कि हम अपनी ठुड्डी कहीं तुड़वा आए हैं और हमीं ने ऊपर का होंठ भी काट लिया है! क्या खूब? किसी को बदनाम करने के लिए उसकी इन करामातों का ढोल उसकी सालगिरह के रोज पीटा जाए। भई, वाह! यह वर्षगांठ भी क्या रही।

('बालसखा' से साभार)

चित्रांकनः सुचिता पवार

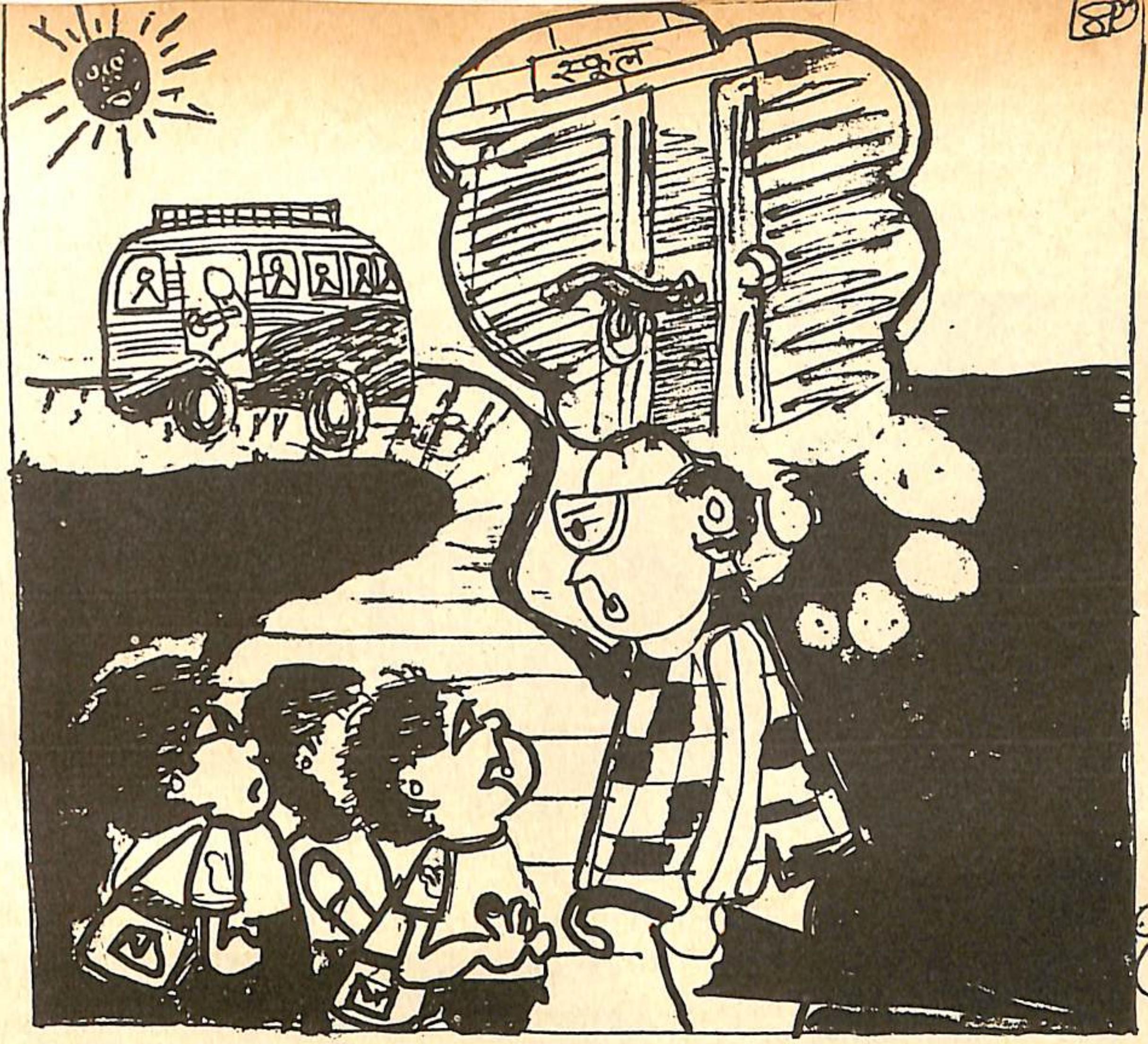

चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

हमारे स्कूल में चोरी हुई

हम सब बच्चे स्कूल गए। स्कूल को खुला देखकर हमने सोचा कि आज मास्टर साहब ने भूल से ताला खुला छोड़ दिया है। हम थोड़े और अंदर गए तो मालूम पड़ा कि ताले तथा सांकल सभी मरोड़ दी है। तब हमें मालूम पड़ा कि स्कूल में चोरी हो चुकी है। फिर हम सभी बच्चे दौड़कर रोड़ पर गए और हमारे मास्टर साहब का इंतजार करने लगे।

बस आते ही हमने दौड़कर सर को बताया कि स्कूल में चोरी हो गई है। मास्टर साहब जल्दी से कदम बढ़ाते हुए स्कूल आए और देखा तो वास्तव में चोरी हो चुकी थी। मास्टर साहब ने हम में से एक लड़के को सरपंच साहब को बुलाने भेजा। सरपंच साहब आए। प्रधान अध्यापक भी आए। कानड़ से दो सर और आ गए और आफिस में सभी बैठ गए और देखने लगे कौन-कौन सा सामान गया हुआ है। चोरी गए हुए सामान को लिखा। उसमें 4 लोटा, 4 गिलास, 1 पेटी आदि सामान गए थे। सरपंच साहब ने थाने में रिपोर्ट दी।

इसके बाद लोटा-गिलास के न होने से मास्टर साहब किट में दिए हुए बीकर से पानी पीने लगे। इसके कुछ दिन बाद फिर चोरी हुई जिसमें चोरों ने काफी नुकसान किया। वे हमारी किट बाक्स को उठा ले गए और साथ में एक पेटी और ले गए! वे किट के सामान के साथ दूसरी पेटी के सामान को स्कूल के पीछे वाली पहाड़ी पर फेंक गए। वे किट की तराजू-बांट ले गए और ढेर सारा सामान तोड़-फोड़ दिया।

फिर विज्ञान पढ़ाने वाले सर ने सभी चोरी गए सामान की सूची बनाई और डबल रिपोर्ट की। लेकिन अभी तक पुलिस ने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया। फिर सर ने गांव के लुहार से एक लोहे की सांकल बनवाई और स्कूल में लगा दी है। इस प्रकार हमारे स्कूल में दो बार चोरी हो चुकी है।

□ रीतेश भुयारकर
पालड़ा, आगर

जून, 87 अंक की चित्र प्रतियोगिता में प्राप्त रचनाओं में से चार यहां प्रकाशित कर रहे हैं। चित्रों के साथ दिए गए शीर्षक वे हैं जो खुद चित्रकार तंजम नरसिम्हन ने ही सोचे हैं।

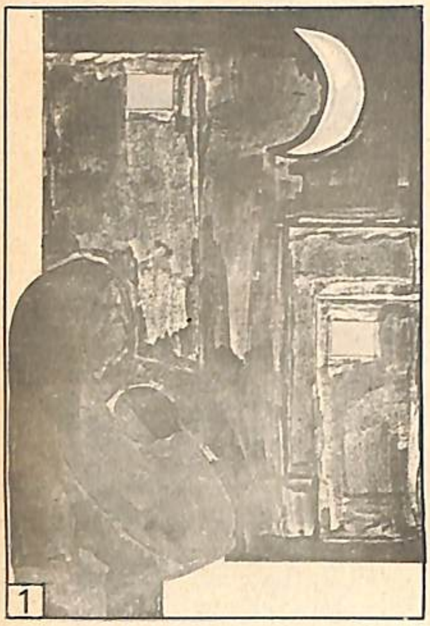

चंदा मामा आ जा!

पेड़ के ऊपर चढ़के आ!

समुंदर पर चमकते आ!

पहाड़ों पर दौड़ते आ!

बादलों के अंदर छिपके आ!

जंगल के बीच से सरक के आ!

तब तो नाग नाचेगा!

मेरे साथ हंसने-खेलने आ!

एक

अटक रहा है पर्यावरण गिरने को तड़प रहा है
आदर्श अब बदल डालो, जमाना बदल गया है
पेड़ अब न काटो पर्यावरण बिगड़ गया है
पहले तो चांद देखने में महिने लग जाते थे
किंतु अब तो चांद भी बे वफा हो गया है
पर्यावरण बिगड़ गया है, पर्यावरण बिगड़ गया है।

पेड़ों पर फल लटक रहे, न जाने कब छिटक गए हैं
ठीक ऐसे ही पर्यावरण चुनौती पर लटक रहा है
फल को पकने की देर है, पर्यावरण को बिगड़ने में कुछ नहीं....
बादल एक न रहा गगन पर स्वच्छ चांदनी छाई है
अब तो किरणें भी पानी पीने जाती हैं, हर नदी में छाई हैं
पर्यावरण बिगड़ गया है, पर्यावरण बिगड़ गया है।

सिर्फ रेगिस्तान ही बचा है मुखड़ा दिखाने को
बदली जो भूल से छाई है, सिर्फ पेड़ों के झुरमुट पर
कभी बादल उठते हैं, पेड़ों पर मंडराने को
चेतावनी भी देती है, सचेत भी करती है
जरा सोचो तो यह सरासर चुनौती है सांप की
पर्यावरण बिगड़ गया है, पर्यावरण बिगड़ गया है।

□ दयाराम गोयल,बारहवीं
मेघनगर, झाबुआ

दो

चंदा मामा आते हैं, सबके मन को भाते हैं
मां बच्चे को चंदा की कविता कह के सुलाती है।
कितने अच्छे चंदा मामा, सबको अच्छे लगते हैं।।
चंदा मामा....

कभी पेड़ के पीछे छिपते, कभी सामने आते हैं।
कभी नदी के तट पर होते, कभी दूर चले जाते हैं।।
चंदा मामा....

कभी सूने आकाश में होते, कभी बादलों में होते हैं।
चांद अपनी चांदनी से पेड़ों को चमकाते हैं।।
चंदा मामा....

चांद की चांदनी से धरती चमकने लगती है।
चांद की चांदनी देखकर नाग मतवाले होते हैं।।
चंदा मामा....

□ योगेश, गौतम, आठवीं
सांडिया, पिपरिया

–तीन–

वृक्ष धरती के वस्त्र ही नहीं खाल हैं। वे उसको स्वस्थ्य रखते हैं, परंतु जब वृक्ष कटते हैं तो धरती की चमड़ी उधड़ने लगती है। सारी दुनिया में धरती का यही हाल है। और उसकी बीमारियां ऊसर, लवणीकरण, रेगिस्तानों के विस्तार और भूस्खलनों के रूप में प्रकट होने लगी हैं। सूखा, बाढ़ और धूल भरी आंधी के रूप में बार-बार हमें ऐसी चेतावनी मिलती रहती है। अब वर्षा प्रारम्भ होने के साथ ही भूक्षरण के रूप में धरती का क्रंदन प्रारम्भ हुआ है। इसका परिणाम क्या होगा? संपूर्ण मानव जाति के लिए संकट के दिन।

यदि इनका उपचार न किया गया तो संकट बढ़ता जाएगा और हम कयामत के दिन के निकट पहुंच जाएंगे। इस परिस्थिति को टालने का एक मात्र उपाय है, पेड़ लगाकर करो उद्धार। हर परिस्थिति में सब प्रकार की जलवायु में चाहे वह पहाड़ की चोटी हो, समुद्र का तट हो या पठार, यहां तक कि रेगिस्तान में भी पेड़ उग आते हैं। प्रारम्भ में बच्चों की तरह उन्हें सार संभाल चाहिए। वह हमें प्राणवायु, जल, अग्नि, भोजन, वस्त्र, मकान, औषधि, चारा और छाया देता है। मिट्टी और जल का संरक्षण कर मानव जाति के जीवन के लिए आवश्यक मूलभूत पूंजी का निर्माण करता है। सघन वन नदियों की जन्मभूमि है और वे कभी न सूखने और गाद से भरने वाले प्राकृतिक बांध है। मानव जाति के लिए पेड़ों की मुख्य उपज मिट्टी पानी और बयार है। वे धरती से जो कुछ लेते हैं उसे पुनः पूर्ति कर जिंदा रहने के नियम का पालन करते हैं।

भारत एक कृषि प्रधान देश है। पर स्थिति उतनी सहज नहीं। हमारे भूमि प्रबंध पर्यावरण की मौजूदा स्थिति और भू-स्त्रोतों के उपयोग की वर्तमान दशा तो कुछ अन्य ही संकेत प्रकट करती है।

हवा से क्षरण रोकने के लिए, भूमि पर हरा आवरण ज़रूरी है। उससे हवा की रफ्तार और मार रुकती है। वृक्षों के रोपने से अच्छे चारागाह भी विकसित होते हैं और उन इलाकों को इमारती तथा जलाऊ लकड़ी भी मिलने लगती है। जैसे राजस्थान में किए गए प्रयोग, मनमानी चराई रोक दिए जाने पर चौगुने पोषण के और लाभप्रद उदाहरण भी प्राप्त हुए हैं।

पर्यावरण रक्षा की दृष्टि से, वैसे भी बहुत देर हो चुकी है। दुनिया की सर्वोत्तम इच्छा शक्ति इसमें सिमट आए तो भी क्षरण की इस प्रक्रिया को रोकने में हमें कई वर्ष लगेंगे।

जन अभियान चलाकर पर्यावरण रक्षा के प्रति जन चेतना जगाई जा सकती है। जैसे हाल में होशंगाबाद जिले में नर्मदा प्रदूषण की समस्या हल करने के लिए युवाओं और नागरिकों ने 'नर्मदा बचाओ-प्रदूषण मिटाओ' का शांतिपूर्ण अभियान चलाया और उन्हें सफलता भी मिली।

□ **जनमेजय रजक, ढीमरखेड़ा**
जबलपुर

(भई, अगर अपने विचार और अधिक सरल भाषा में प्रकट करोगे तो ज्यादा लोग समझेंगे। —सं.)

–चार–

चित्र 4: तपता सूरज, वृक्षहीन पहाड़ एवं सूखी नदियां।

चित्र 5: कटे हुए वृक्ष, उमड़ते बादल, तपता सूरज।

चित्र 6: कटे हुए वृक्षों पर झूलता हुआ मानसून, अकाल का सूचक है।

चित्र 7: सूरज की गरमी को वृक्ष के कटे तने नहीं रोक सकते, इसे तो सिर्फ वृक्षों से आच्छादित वन ही रोक सकते हैं।

□ **अलका सक्सेना, दसवीं**
गाडरवारा

चित्रः मनीष स्याग, देवास

पंजीयन क्रमांक 1317/सी/85 चकमक डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/87

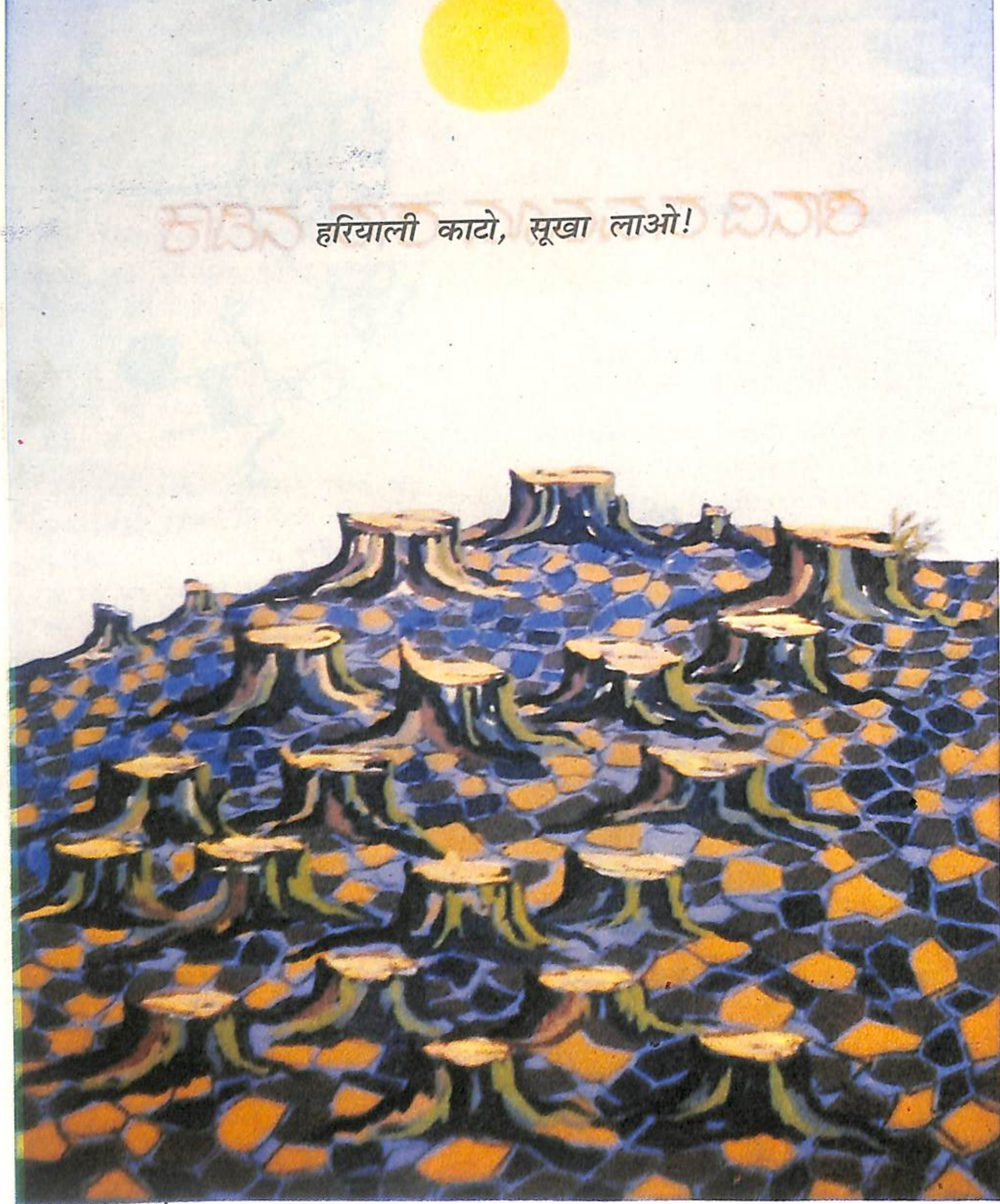

चित्र : जगदीश अमुंजे

मीडिया एक्सप्लोरेशन फॉर सोशल एंड कल्चरल एडवांसमेंट, बंगलौर के सौजन्य से

जब पृथ्वी से हरियाली (पेड़-पौधे आदि) नष्ट कर दी जाती है, तो पृथ्वी सूर्य की गरमी से तप जाती है। पृथ्वी की ठंडी हवा गरम होकर ऊपर आकाश में जाती है और बादलों को छिन्न-भिन्न कर देती है, इससे वर्षा कम होती है।

एकलव्य के लिए विनोद रायना द्वारा प्रकाशित एवं भंडारी आफसेट प्रिंटर्स, भोपाल द्वारा मुद्रित
कागज 'यूनिसेफ' के सौजन्य से